



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

गाडकंडुडयं येयं,
अरुयस्सीवरज्जडं ।।
ब्रण को अधिक खुजलाना
ठीक नहीं है, क्योंकि उससे
कठिनाई पैदा होती है।

नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 10 ● 11-17 दिसंबर, 2023



प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 09-12-2023 ● पेज : 12 ● ₹10 रुपये

आत्मा से परमात्मा बनने का माध्यम है मानव जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

अंधेरी, 8 दिसंबर, 2023

अध्यात्म जगत के महासूर्य, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने त्रिदिवसीय अंधेरी प्रवास के दूसरे दिन मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शास्त्रों में एक महत्त्वपूर्ण आगम है— उत्तराध्ययन। उसके दसवें अध्ययन में बताया गया है कि मनुष्य-जन्म दुर्लभ है। ८४ लाख जीव-योनियाँ बताई गई हैं, जिनमें हमारी आत्मा भ्रमण करती है।

धर्म का एक सिद्धांत है कि आत्मा शाश्वत है, शरीर नश्वर है। हम सबकी आत्मा है, इस जीवन से पहले भी थी और आगे भी रहेगी। चार गतियों में, संसारी अवस्था में आत्मा भ्रमण करती रहती है। मैं आत्मा हूँ, शरीर तो मेरे साथ है, पर दोनों अलग-अलग है।

चार शब्द हैं—व्याधि, आधि, उपाधि और समाधि। शारीरिक बीमारी व्याधि है। मानसिक बीमारी आधि है। भावनात्मक बीमारी उपाधि है। इन तीनों बीमारियों से छुटकारा होता है, तो फिर समाधि शांति रह सकती है। आंतरिक शांति समाधि है। जैन धर्म में कर्मवाद का सिद्धांत है कि आदमी जैसा कर्म करता है, वैसा फल भोगना होता है।

मानव जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, जो अभी हमें प्राप्त है। इस मानव जीवन में



साधना करके आत्मा से परमात्मा बना जा सकता है। आदमी और पशु में कई बातों में समानता है, पर धर्म की जो साधना इंसान कर सकता है, वो पशु नहीं कर सकता है। आदमी के पास विवेक रहे और विवेक से काम करे तो जीवन अच्छा बन सकता है।

राग और द्वेष नकारात्मक संस्कार हैं। सकारात्मक संस्कार में क्षमा, दया, संतोष आदि हैं। आसक्ति एक ऐसा रोग है, जो बड़ा नुकसानदेह बन जाता है।

विषयों के प्रति ज्यादा आकर्षण होने से व्यक्ति काम में आसक्त हो स्मृति भ्रंश हो जाता है। विकास का मार्ग रुक सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा आयोजित डिजिटल डिटोक्स कार्यक्रम के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा—आधुनिक यंत्रों को एक अवस्था से देखें तो ये बड़े उपयोगी हैं। अनेक जानकारियाँ मिल सकती हैं। उजला पक्ष हो सकता है, तो अंधेर पक्ष भी हो सकता है। दोनों पक्षों

को निष्पक्ष भाव से देखकर अंधेर पक्ष को काम में नहीं लेना चाहिए। सुविधा का दुरुपयोग न हो। मोबाइल को भी नवकारसी कराने का प्रयास करें, उसका संयम करें। रात को 92 बजे से सुबह 7 बजे तक जहाँ तक हो सके अनिवार्य कारण के सिवाय मोबाइल का उपयोग न करें। पूज्यप्रवर ने श्रावक-श्राविकाओं को इसका संकल्प करवाया। खाना खाना और साथ में टीवी देखना ये दो कार्य एक साथ न हों। प्रवृत्ति का संयम होने से

आत्मा उज्वल हो सकती है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि व्यक्ति दुनिया में आता है और चला जाता है। जन्म-मरण के बीच में हमारा जीवन है। हम जीवन कैसा जी रहे हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। जीवन एक आइस्क्रीम की तरह क्षणभंगुर है। जो व्यक्ति धर्म करता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आयोजित डिजिटल डिटोक्स कार्यक्रम के अंतर्गत प्यारचंद मेहता व अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस संदर्भ में मुनि जागृत कुमार जी व मुनि अभिजीत कुमार जी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित कैसर रोग विशेषज्ञ डॉ० सौरभ गोस्वामी, तारक मेहता का उल्टा चश्मा के प्रोड्यूसर व डायरेक्टर असित मोदी, भारत सरकार की प्लानिंग कमिश्नर की मेबर अर्चना जैन, मीरा-भायंदर की विधायक गीता जैन, साइकोलॉजिस्ट डॉ० रिक्की पोरवाल, डॉ० निष्ठा दलवानी, स्टेम सेल्स विशेषज्ञ डॉ० दिनेश कोठारी ने डिजिटल डिटोक्स के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। अंधेरी सभाध्यक्ष चैनरूप दुगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भीतरी अंधकार मिटाने के लिए ज्ञान की ज्योति जलाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण



अंधेरी, 3 दिसंबर, 2023

जन-जन को नशामुक्ति का पाठ पढ़ाने वाले अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी वृहत्तर मुंबई के उपनगरों की यात्रा करते हुए आज अंधेरी पधारे। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन साधना पद्धति में संवर और निर्जरा ये दो महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। धर्म इन दो में समाविष्ट हो सकता है। पाप कर्म के आगमन के रास्ते को रोक देना संवर होता है और पूर्व अर्जित जो पाप कर्म है, उनको नष्ट करना निर्जरा हो जाती है।

संवर और निर्जरा में एक अपेक्षा से संवर बहुत महत्त्वपूर्ण है। निर्जरा तो बहुत से प्राणियों के होती है, पर संवर हर किसी प्राणी के नहीं होता। तात्त्विक भाषा में तो चौथे गुणस्थान के बाद हमारे शास्त्रों में संवर की बात बताई गई है, जबकि निर्जरा तो पहले गुणस्थान में भी हो सकती है।

संवर का सबसे सशक्त माध्यम है—स्वाध्याय। स्वाध्याय करने के लिए बाह्य प्रवृत्ति से निवृत्त होना होगा। नींद से भी निवृत्त होना पड़ता है। व्यर्थ बातों से विरत होना होता है। स्वाध्याय के प्रति समर्पण और आकर्षण का भाव हो तो अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)



वाणी के संयम के साथ विवेक भी हो : आचार्यश्री महाश्रमण



गौरैगाँव, 9 दिसंबर, 2023

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः गौरैगाँव सेंट पायस कॉलेज प्रांगण में पधारें। मानवीय मूल्यों की प्रेरणा प्रदान करते हुए महामानव आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारे जीवन में आत्मा तो मुख्य तत्व

है। आत्मा के साथ तीन चीजें और हैं—शरीर, वाणी और मन। आत्मा को मिलाकर चार चीजें हो गईं, यही हमारा जीवन है।

शरीर से हम अनेक प्रवृत्तियाँ करते हैं। वाणी से हम बोलते हैं। मन से हम सोचते हैं, स्मृति करते हैं। हमारे पास

वाणी की शक्ति विशिष्ट है। दुनिया में अनेक भाषाएँ हैं। अनेकार्थक शब्द हैं। हम संयमपूर्वक भाषा का प्रयोग करते हैं, तो हमारी भाषा बहुत गरिमापूर्ण और उपयोगी बन सकती है।

मितभाषिता हो, वाणी के संयम के साथ विवेक भी हो कि कब, कैसे और

कहाँ बोलें। मौन भी अच्छा है, पर जहाँ ज्ञान देने की बात है, वहाँ बोलना भी पड़ता है। बोलने से अनेकों को ज्ञान मिल सकता है। प्रवचन से अनेकों को शुभ भाव में रहने का अवसर मिल सकता है। पूज्यप्रवर ने जैन धर्म श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की प्रारंभिक जानकारी दी। पाँच महाव्रतों का भी विवेचन किया।

बिना पूछे मत बोलो, बोलो तो सत्य बोलो, गुरुसे पर नियंत्रण करो, उसे विफल करो। प्रिय-अप्रिय जो भी स्थिति आए उसे सहन करो। हम मुख्यतया तीन बातों का यात्रा में प्रचार कर रहे हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। मानव अच्छा मानव बने।

जैन धर्म के मौलिक सिद्धांत हैं—आत्मवाद, कर्मवाद व पुनर्जन्मवाद। जब तक संसारी रूप में आत्मा भ्रमण करती है, उसका चार गतियों में जन्म-मरण होता रहता है। जैन धर्म का मुख्य मंत्र—नमस्कार महामंत्र है। हमारा मूल लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति हो, इसके लिए धर्म-तप की साधना होती है। हमारे साधु-साध्वियाँ सूर्यास्त बाद सूर्योदय तक खाना-पीना नहीं करते हैं। हमारी प्रायः पैदल यात्रा ही होती है। हम भिक्षा से ही

गृहस्थों से भोजन-पानी लेते हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु का सर्वोपरी स्थान रहा है। संतों के चरणों में अनेक लोग आते हैं। गुरु समाधायक होता है। आज इस शैक्षणिक संस्थान में अध्यात्म-गुरु का शुभागमन हुआ है। आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्यों का आत्मोत्थान करते हैं। वे व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न गुरु मिलते हैं। गुरुओं की आज्ञा अविचारणीय होती है।

फादर डॉ० माइकल रोजेरियो ने कहा कि जैसे स्वयं से प्यार करते हो वैसे ही अपने पड़ोसियों से प्यार करो। आचार्यश्री महाश्रमण जी करुणा की मूर्ति हैं। प्रेम से प्रेम बढ़ता रहे।

सेंट पायस कॉलेज के प्राचार्य फादर एनसेटो परेरा ने भी संक्षिप्त में अपनी बात रखी। सभाध्यक्ष छतरलाल सिंघवी, भीमराज चिंडालिया, तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा प्राचार्य का साहित्य से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मकल्याण के लिए करें मानव शरीर का सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

अंधेरी, 5 दिसंबर, 2023

अंधेरी प्रवास के तीसरे दिन संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव शरीर बहुत महत्वपूर्ण है। देवता हो या नारकीय जीव उनके पास इतना अच्छा शरीर नहीं है। मनुष्यों के पास औदारिक शरीर है, जबकि देवों और नारकीय जीवों के वैक्रिय शरीर होता है। आहारक शरीर भी अच्छा हो सकता है, पर एक अपेक्षा से वह भी उतना अच्छा नहीं है।

गुणस्थान से ऊपर की जो साधना है, वो इस औदारिक शरीर की स्थिति में हो सकती है। आहारक शरीर में छठे गुणस्थान की योग्यता हो सकती है। औदारिक शरीर साधना का मंदिर बन सकता है। मनुष्य के रूप में हमें औदारिक शरीर प्राप्त है, यह सौभाग्य की बात है। आत्मकल्याण के लिए इस शरीर का उपयोग करें।

वार्धक्य में आदमी परवश हो सकता है। शरीर में व्याधि न बढ़े, इंद्रियाँ क्षीण हो जाएँ तब तक धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए। शरीर को नौका कहा गया

है। जीव नाविक है। यह संसार महा समुद्र है। महर्षि लोग इसको तर जाते हैं।

वह माता भी धन्य होती है, जिसकी संतान गृहस्थ को छोड़ कर साधुत्व को स्वीकार कर लेती है। आदमी को गृहस्थावस्था में रहकर भी आध्यात्मिक-धार्मिक साधना व सेवा करने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा

कि मैत्री की भावना से व्यक्ति गुण संपन्न हो सकता है। दूसरे प्राणियों के प्रति आत्मिक-हित चिंतन करना मैत्री की भावना है। मधुर भाव से शत्रु भी मित्र बन सकता है। मैत्री भावना वाला कभी दूसरों का अहित चिंतन नहीं करता है। हमें भीतर की ग्रंथियों को खोलकर निग्रन्थ बनना है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में

स्वागताध्यक्ष प्रिया जैन, उम्मेद नाहटा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। तेयुप अंधेरी के युवकों ने गीत की प्रस्तुति दी। बर्सोवा विधायक भारती लावेकर ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सामूहिक ज्ञानशाला का आयोजन

साउथ कोलकाता।

ज्ञान पंचमी के उपलक्ष्य में साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के तत्वावधान में एवं मुनि दिनेश कुमार जी के सान्निध्य में सामूहिक ज्ञानशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुनिश्री ने बच्चों को विभिन्न प्रयोग करवाए तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप के विषय में समझाया। इसके पश्चात उन्होंने सभी बच्चों को त्याग का महत्त्व बतलाते अध्ययन एवं भोजन के समय आवश्यक कार्य के अलावा मोबाइल एवं टी०वी० के उपयोग का प्रत्याख्यान करवाया।

कार्यक्रम में जैन विद्या की परीक्षा देने वाले बच्चों को और दिवाली पर पटाखे नहीं छोड़ने वाले बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। समाज की सभी संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी उपस्थिति रही। राजकुमारी सुराणा ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। लगभग ७० ज्ञानार्थी बच्चों और १५ प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही।

शीतरी अंधकार मिटाने के लिए ज्ञान की..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अध्ययन-अध्यापन के लिए योग्य गुरु और योग्य विद्यार्थी हो। अच्छी पुस्तकें भी चाहिए। स्थान भी साफ और शांत हो। इनसे ज्ञान का द्वीप प्रज्वलित हो सकता है।

आज अंधेरी आए हैं। आचार्य भिक्षु से जुड़ी मेवाड़ में केलवा की अंधेरी ओरी भी है। अंधकार भीतर का दूर हो, इसके लिए ज्ञान की ज्योति जलाने की अपेक्षा होती है। दुनिया में अनेक ज्ञान प्राप्ति के स्थान हैं। ज्ञान प्राप्ति के प्रति विद्यार्थियों का रुझान भी है। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार, अच्छे आचार भी हों। आचारविहीन ज्ञान या ज्ञानविहीन आचार है तो दोनों अधूरे हैं। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों में धर्म, अध्यात्म, योग इनका भी उपक्रम चले।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने बहुत अध्ययन-अध्यापन किया था। ग्रंथों से कितना ज्ञान धर्म का, अध्यात्म विद्या का प्राप्त किया जा सकता है। अच्छी बात है कि दुनिया में संतों का विहरण होता है। संतों से लोगों को प्रेरणाएँ मिलती हैं। संतों की संगति से ज्ञान प्राप्ति हो सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि ऋषियों के लिए विहार-चर्या को प्रशस्त माना गया है। आचार्यश्री जहाँ-जहाँ पधारते हैं, लोग आपके प्रति आकर्षित हो प्रभावित होते हैं। अनेक जैन-अजैन लोग पूज्यप्रवर के संपर्क में आते हैं। अन्य आम्नाय की साधु-साध्वियाँ भी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचते हैं और एक ऊर्जा का रसास्वाद करते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय सभाध्यक्ष चैनरूप दुगड़, मंत्री ललित लोढ़ा, ज्ञानशाला, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, क्षेत्रीय संसद सदस्य गजानंद कीर्तिधर ने अपनी भावाव्यक्ति की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के ११०वें जन्मोत्सव के आयोजन

मुंबई

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में बीकानेर के सेमुनौ इंटरनेशनल टेक्नो स्कूल एवं हीरालाल सोभागमल रामपुरिया उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बाल नाटक 'अणुव्रत की बात' की प्रस्तुति दी। इसके माध्यम से उन्होंने बताया कि मनुष्य जीवन में कितने गुण होने चाहिए कि उसका अंतर्मन शीतल झरने की तरह हो जाए। इस नाटक में अणुव्रत विश्व भारती की ओर से चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों को समाहित किया गया। अणुव्रत गीत के साथ बाल नाटक का समापन हुआ। नाटक का निर्देशन अणुविभा के पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ० नीलम जैन ने किया।

अणुव्रत पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार जी ने नैतिकता, अहिंसा, व्यावहारिकता, आचार-विचार, जीवन-विज्ञान के प्रयोग, अणुव्रत जीवन संदेश विषय पर छात्र-छात्राओं के साथ गहन चर्चा की। अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने शिक्षक वर्ग के सम्मुख विद्यालय को दंडमुक्त बनाने के उपाय रखे और छात्र-छात्राओं को अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा दी। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण अणुव्रत यात्रा के माध्यम से अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष व पर्यावरण प्रभारी प्रताप दुगड़, बीकानेर से समाजसेवी, अणुव्रत संरक्षक बसंत नौलखा सहित अणुविभा के अनेक पदाधिकारी, अणुव्रत कार्यकर्ता व अन्य श्रावक-श्राविकाओं ने बच्चों की प्रस्तुति को सराहा।

हैदराबाद

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस मनाया गया। सिकंदराबाद तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का व्यक्तित्व अनुपम था। उन्होंने जो भी कार्य आरंभ किया, उसे मंजिल तक पहुँचाया। वे अनंत

पुण्याई के पुंज थे। तेरापंथ धर्मसंघ का ही नहीं, संपूर्ण मानवता का सौभाग्य था, जिन्हें एक शक्तिशाली मार्गदर्शक मिला। आचार्यश्री तुलसी की हर कार्य के पूर्व त्रिपदी होती, चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति में विलम्ब नहीं होता। हर कार्य सुनियोजित करने की उनमें अद्भुत कला थी। उन्होंने अनेक अवदान दिए जो कल्याणकारी और जीवन के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने आगे कहा कि उनकी पारखी नजर ने सुयोग्य, प्रशिक्षित शिष्यों की लंबी कतार खड़ी कर दी। आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी जैसी परम कृतियाँ प्रदान करने वाले महासूर्य तुलसी के प्रति संपूर्ण तेरापंथ संघ कृतज्ञ है। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी की सन्निधि में प्राप्त शिक्षाएँ, प्रोत्साहन, प्रेरणाएँ मेरे लिए अनमोल विरासत है। उनके श्रीचरणों में उपासना से श्रुत-मुक्ता ग्रहण करने का मुझे भी सौभाग्य मिला।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा मंत्री सुशील संचेती, टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, महासभा सदस्य एवं तेरापंथ सभा परामर्शक लक्ष्मीपत बेंद ने श्रद्धासिक्त भाव प्रस्तुत किए। चांद बैद, तेममं ने गीतों का संगान कर गुरुदेव तुलसी की अभ्यर्थना की। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के सदस्यों ने सामुहिक रूप से उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में, अणुव्रत समिति कोलकाता व हावड़ा के तत्वावधान में आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में तेरापंथ भवन में मनाया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने कर्तृत्व, व्यक्तित्व व अणुव्रत आदि अवदानों के द्वारा स्वर्ग को धरती पर लाने का प्रयास किया। आचार्यश्री तुलसी भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न थे। वे मानवता के मसीहा, शांति के पैगंबर व साधना के श्लाका पुरुष थे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि उनका जन्म राजस्थान के नागौर जिले के लाडनू शहर

में हुआ। मात्र बाईस वर्ष की उम्र में आचार्यश्री कालुगणी के सक्षम प्रभावशाली उत्तराधिकारी बने। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी, सूझबूझ, दूरदर्शी व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के ज्ञाता थे। वे नियोजक थे। सभी लोग उस महापुरुष द्वारा बताए गए मार्ग पर चलेंगे तो उनका जन्म दिवस मनाना सार्थक होगा।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ कर भारत के नागरिकों के चरित्र को ऊँचा उठाने का महान प्रयत्न किया। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति, कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंधी, तेरापंथ सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली ने विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं ने व गीत संगान उषा बरडिया ने किया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति के मंत्री नवीन दुगड़ ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

कालू

स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी इंसान की सूरत में एक फरिश्ते थे, जिन्होंने सिसकती इंसानियत को अमन-शांति का पैगाम दिया। उनका जीवन विविधताओं का संगम रहा। एक विशाल धर्मसंघ के अधिशास्ता होने पर भी सांप्रदायिकता उनसे सदैव अछूती रही। मानवीय कल्याण हेतु उन्होंने समाज को अमूल्य अवदान दिए, जिनमें एक है—अणुव्रत।

साध्वीश्री जी ने अणुव्रत का अर्थ बताते हुए कहा कि छोटे-छोटे व्रत अर्थात् अणुव्रत। मानवीय आचार संहिता का नाम है—अणुव्रत। इन छोटे-छोटे संकल्पों से ही बड़ी क्रांति घटित हो सकती है। अणुव्रत ने देश के सभी वर्गों को जीवन मूल्य से जोड़ा है। अणुव्रत एक व्यापारी से कहता है तुम व्यापार में प्रामाणिकता रखो। यह नैतिक क्रांति का आंदोलन है। इस आचार संहिता का पालन करने वाला ही अणुव्रती बन सकता है।

कार्यक्रम का प्रारंभ कांता देवी पुगलिया के मंगलाचरण से हुआ। चंदा दुगड़, सुशील बरमेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी नम्रप्रभा जी ने अपने

विचारों को अभिव्यक्ति दी।

बीदासर

साध्वी रचनाश्रीजी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि भैया दूज के दिन जन्मे आचार्य श्री तुलसी, दूज के चांद के समान ही तीन विशेषताओं से युक्त थे। पहली विशेषता है दूज का चांद बेदाग होता है। आचार्यश्री तुलसी का जीवन भी बेदाग था। दूज का चांद सतत बढ़ता रहता है। आचार्यश्री तुलसी हमेशा आगे से आगे बढ़ते रहे। दूज के चांद को देखने की प्रतीक्षा सब करते हैं। आचार्यश्री तुलसी की भी हर जगह, हर कोई प्रतीक्षा करता। गुरुदेव का व्यक्तित्व तेजस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी था।

आचार्यश्री तुलसी स्वाति नक्षत्र में सीप के मुख में गिरने वाली बूँद की तरह ही वर्चस्वी थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को भी तेजस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी बनाया। शासनश्री साध्वी साधनाश्री जी ने आचार्यश्री तुलसी के श्रम एवं रचना कौशल पर प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने गुरुदेव की अनुशासन शैली के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पाली के श्रावकों की घटना बताई। साध्वी जयंतयशा जी, साध्वी गीतार्थप्रभा जी और साध्वी नमनप्रभा जी ने वक्तव्य एवं कविता की प्रस्तुति दी।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत को सुमधुर स्वर दिया। सभा की ओर से रवि सेखानी ने विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी लब्धियशा जी ने किया।

तिरुपुर

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री एवं साध्वी प्रिय कृतांजनाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने अणुव्रत के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी ने आचार्यश्री तुलसी के बारे में कहा कि आचार्य तुलसी को शब्दों में बाँधना बहुत मुश्किल है। तुलसी का भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ा योगदान है।

साध्वी प्रिय कृतांजनाश्री जी ने कहा

कि आचार्यश्री तुलसी के केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी जैन धर्म को फैलाया है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू से सभी संप्रदाय के साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सहयोग मिला है, वह अतुलनीय है। आचार्यश्री तुलसी के अवदानों को भुलाया नहीं जा सकता।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मयंकपभा जी ने कहा कि विश्व में तीन प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं—आत्मदृष्टा, युगदृष्टा, भविष्यदृष्टा। आचार्यश्री तुलसी के जीवन-दर्शन को पढ़ते हैं तो लगता है आचार्यश्री तुलसी के अंतर्गत ये तीनों ही आते हैं। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्षानीतू सिंधवी, सोहनलाल जैन, प्रिया कर्णावट, शैलेंद्र जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की अध्यक्ष व पूर्व अध्यक्षों के द्वारा साध्वी प्रिय कृतांजनाश्री जी को साहित्य भेंट किया गया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री मनोज भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

नवरंगपुर

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, नवरंगपुर द्वारा दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम के साथ आचार्य तुलसी का ११०वाँ जन्मोत्सव और द पावर ऑफ सेल्फ पावर तीनों कार्यक्रम एक साथ संपन्न किए गए। कार्यक्रम सुशीला विजय जैन के घर पर रखा गया। बहन सुशीला देवी ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ महावीर स्तुति से किया गया। अध्यक्ष बाँबी जैन ने तीनों कार्यक्रमों की जानकारी दी।

तारा देवी सुराणा ने आचार्य तुलसी जन्मोत्सव के बारे में जानकारी दी। गरिमा जैन ने महावीर स्वामी के ऊपर एवं द पावर ऑफ सेल्फ पावर कहानी के माध्यम से सरल तरीके से समझाते हुए कहा कि अपना सेल्फ कॉन्फिडेंस अगर रखें तो बड़े से बड़े मुकाम भी हासिल कर सकते हैं। पूजा जैन ने ध्यान एवं मानसिक शांति के प्रयोग करवाए। विंदिया जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।



महिला मंडल के विविध आयोजन



द पावर ऑफ सेल्फ पावर कार्यशाला का आयोजन बीदासर।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, बीदासर के तत्वावधान में 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि 'द पावर' यानी आत्मशक्ति। शक्ति का बोध, शक्ति का जागरण और उसका सही दिशा में नियोजन ही सफलता का सूत्र है। आत्मा में अनंत शक्ति है। द पावर शब्द से उस शक्ति को उजागर किया जा सकता है। व्यक्ति अपने सांसारिक कार्यों के लिए तो टाइम टेबल बना लेता है, लेकिन जब आध्यात्मिक कार्य करना हो तब उसके पास समय नहीं होता। शक्ति का विकास तब होगा जब सांसारिक के साथ-साथ आध्यात्मिक कार्य के लिए भी टाइम मैनेजमेंट करेंगे। २४ घंटों में दो-दो मिनट निकालें तो एक सामायिक हो सकती है। जो भीतर के आनंद का साक्षात्कार कराती है।

धर्म सिखाता है सबका सम्मान करो। सबका सम्मान करने वाला विनय करता है और विनय आत्मशक्ति को उजागर करता है। इन बिंदुओं को जीवन में अपनाने से व्यक्ति अपने आत्मा की अनंत शक्ति को जगाता है स्वयं को शक्तिसंपन्न बना लेता है। साध्वी लबिधयशा जी ने भी विषय प्रस्तुति दी।

संपत देवी बोधरा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल ने संकल्प गीत के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेममं के तत्वावधान में अभातेमम के निर्देशानुसार 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने आदिनाथ स्तवन का सामूहिक संगान से किया। अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी का स्वागत किया और नारी लोक का वाचन किया। फेस योगा के बारे में बताया।

कार्यशाला की मुख्य प्रवक्ता बबीता लोढ़ा ने बताया कि अपनी आत्मा में अनंत शक्ति है। अगर उसे पहचान लेंगे तो जीवन में आगे बढ़ पाएंगे। आध्यात्मिकता की सहायता से मनुष्य अपनी आत्मशक्ति को मजबूत बना सकता है। बबीता लोढ़ा ने गजसुकुमाला की कहानी के माध्यम से सहनशीलता कैसी होनी चाहिए विस्तार से समझाया।

सबको एक हफ्ते के लिए ध्यान, मौन, स्वाध्याय और प्राणायाम करने का संकल्प कराया। धन्यवाद ज्ञापन पिकी भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

नोखा।

अभातेमम द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला का आयोजन तेममं, नोखा द्वारा तेरापंथ

भवन में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ भगवान महावीर के जप से किया गया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया गया। साध्वी राजीमती जी ने कहा कि इंसान को अपनी आत्मशक्ति पर पूरा विश्वास होना चाहिए। आत्म शक्ति तभी बढ़ेगी जब हम अपनी आत्मा को देखेंगे और भीतर की शक्ति को जगाएंगे, श्वास दर्शन से भी सेल्फ पावर बढ़ता है।

साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कहा कि सेल्फ पावर बढ़ाने के लिए हमारा आत्मविश्वासी होना व परिश्रमी होना जरूरी है। चौमासी चौदस के उपलक्ष्य में काफी भाई-बहनों ने उपवास व एकलठाणा के सामूहिक पचक्खान किए। स्वागत अध्यक्ष सुमन मरोठी और आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति मरोठी ने किया।

कोयंबदूर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं ने तेरापंथ भवन में विभिन्न कार्यक्रम पाँच चरणों में आयोजित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के द्वारा कनकप्रभा बुच्चा ने किया। स्थानीय तेममं अध्यक्ष मंजु सेठिया ने सभी का स्वागत किया। केसरिया शक्ति की बहनों ने गीत का संगान किया।

पहला चरण—'कैसे युवतियाँ कर सकती हैं मंडल को और रोशन' में मंडल की जागरूक युवती बहन प्रज्ञा बैद ने अपना अनुभव साझा किया। दूसरे चरण

में 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला में पूर्व अध्यक्ष मधु बाँटिया, प्रियंका बैंगानी व दीपिका बोधरा ने ८ शक्तियों के बारे में बताया। तीसरे चरण में पारंपरिक धान व्यंजन प्रतियोगिता रखी गई। इसमें १४ बहनों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर निहार गोलछा, द्वितीय स्थान पर रचना कांकरिया एवं तृतीय स्थान पर गुन बोहरा व प्रियंका बैंगानी ने प्राप्त किया। चौथे चरण में पारंपरिक परिधान में १० बहनों ने भाग लिया। सभी बहनों ने भारत के अलग-अलग राज्यों को रिप्रेजेंट किया। प्रथम स्थान अपराजिता नाहटा को मिला। दूसरा स्थान आरती सुराणा को तथा तीसरा स्थान अनामिका घीया को मिला। प्रियंका बुरडव रमा गोलछा को कौंसोलेशन प्राइज भी दिए गए। इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक रानी शाह, प्रिया जैन थे। दोनों जजों का परिचय रेखा चोरड़िया ने दिया। पाँचवें चरण में 'दिवाली स्नेह मिलन अपनों के संग' का कार्यक्रम रहा। धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय मंत्री सुमन सुराणा ने दिया। कार्यशाला में लगभग ८० बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सपना नौलखा ने किया।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह

सिकंदराबार।

साध्वीडॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित तेममं, हैदराबाद के तत्वावधान में

'दीपावली स्नेह मिलन : करें अपनों के संग' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ शुभारंभ किया। संयोजिकाओं के काव्य पाठ से मंगलाचरण किया गया। तेममं अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि शांति ही सबसे बड़ी सफलता होती है। नवयुवतियाँ दिन में कम से कम १३ मिनट अपनी किसी साधना द्वारा मन को शांत करने का प्रयास करें। साध्वी राजुलप्रभा जी ने सभा को संबोधित करते हुए नव युवतियों को ऊर्जावान बन संघ के लिए काम करने की प्रेरणा दी।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाली नवयुवतियों को पाँच-पाँच के ग्रुप में अपने-अपने स्टेट को प्रदर्शित करना था। ४५ प्रतियोगियों ने इसमें भाग लिया।

नवयुवतियों ने प्रस्तुति दी। 'नवयुवती कैसे कर सकती है मंडल को रोशन' पर कार्यक्रम की आर्थिक सौजन्यदाता हिमांशु बाफना का परिचय मंत्री सुशीला मोदी ने दिया।

कार्यक्रम में सभा के मंत्री सुशील संचेती एवं बाबूलाल सुराणा पधारे। कार्यक्रम का संचालन संगीता गोलछा ने किया और आभार ज्ञापन नमिता सिंधी ने दिया। कार्यक्रम की संयोजिका संगीता गोलछा, नमिता सिंधी, कविता बेगवानी, निशा दुगड़, निशा सेठिया, चांद बैद, वीनू नाहटा, संतोष गुजरानी रही।

अणुव्रत सिखाता है इच्छाओं पर नियंत्रण

गंगाशहर।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर में आचार्यश्री तुलसी मासिक पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि सुख का राजमार्ग है—इच्छाओं का अल्पीकरण। व्यक्ति की इच्छाएँ अनंत होती हैं। उन अंतहीन इच्छाओं की पूर्ति करना संभव नहीं है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति की इच्छाएँ बढ़ती हैं, त्यों-त्यों वह और अधिक दुख का अनुभव करता है। इच्छा एक रोग है, जीवन का अभिशाप है। अतः व्यक्ति अपनी इच्छाओं को जितना सीमित करता है, उतना वह सुख, आनंद व शांति का अनुभव कर सकता है।

मुनिश्री ने बताया कि व्यक्ति सुखाकांक्षी होता है, वह दुःख चाहता नहीं

है फिर भी दुःख आ जाता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत को स्वीकार करके व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण कर सकता है। इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए गीत का संगान किया।

मुनि विमल विहारी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष किशनलाल बैद ने संतों का स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान में निरंतर आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन हेतु आशीर्वाद प्रदान किया।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

साक्री (खानदेश)।

तेयुप द्वारा आयोजित दंपति कार्यशाला साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुई। कार्यशाला में साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी आत्मयशा जी ने सुखी जीवन में सहनशीलता के बिंदु

पर विस्तृत चर्चा की। साध्वी उन्नतयशा जी ने एक-दूसरे के लिए समय, विषय, पवित्रता कैसे हो इन विषय पर अपना वक्तव्य दिया।

साध्वी रम्यप्रभा जी ने कपल शब्द के एक-एक अक्षर पर सटीक जानकारी प्रदान की। सभी ने कार्यशाला में उत्साह से भाग लिया और सभी को कार्यक्रम अच्छा लगा। अंत में प्रश्नोत्तर का क्रम एक भाग्यचक्र के साथ प्रतियोगिता रही।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुई। मंगलाचरण तेयुप अध्यक्ष पीयूष कर्णावट एवं भूषण कांकरिया ने किया। आभार साध्वीवृंद और उपस्थित समाज का डॉ० सोहन कांकरिया ने किया।

बाल दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल ने बाल दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन बादामी देवी शिशु विहार आश्रम के बच्चों के साथ मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ।

बच्चों को अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प—सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति से परिचित कराया गया। तत्पश्चात् इन्हीं तीनों के आधार पर उन्हें गेम खिलाया गया। गेम व लक्की ड्रा के पुरस्कार वितरण के बाद बच्चों ने तीनों संकल्प स्वीकार किए। कार्यक्रम में तेयुप, साउथ हावड़ा के उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, मंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

आगे बढ़ने का रास्ता है संयम साधना

कृष्णानगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में सफलतम चातुर्मास की परिसंपन्नता के अवसर पर मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि हम तो गुरुदेव की कृपा से विदा हो रहे हैं। मगर आपकी पुण्यार्थ बढ़ती रहे। इस प्रकार के कार्यक्रम हों जिसमें आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण हो, सामायिक, प्रेक्षाध्यान उसके पश्चात योगासन आदि निरंतर गतिमान रहें। जिससे तन भी ठीक रहे, मन भी ठीक रहे और चिंतन भी ठीक रहे। जो आध्यात्मिक वातावरण बना है, वो कहीं हमारे साथ ही बहन न जाए। जप, तप, त्याग साधना का क्रम बना रहे, जिससे श्रावकों का कल्याण हो, चरित्र का निर्माण हो। आगे बढ़ने का रास्ता है—संयम साधना। आपका जीवन साधनामय हो।

कार्यक्रम में महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल

गांधी, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, तेयुप अध्यक्ष विकास चोरड़िया, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन भंडारी, टीपीएफ से पूजा सेठिया, ज्ञानशाला के सह-संयोजक बजरंग कुंडलिया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, विकास मंच के अध्यक्ष दीपचंद सुराणा, श्रावक बाबूलाल मालू, कन्हैयालाल अरिहंत बैद, हितेश दुगड़, अनिल सुराणा, अरिहंत सुराणा, भूपेंद्र सिंघवी, प्रिया महनोत, विमला सुराणा, सीमा चोपड़ा, समता सुराणा, यशोदा सुराणा एवं खुशबू बैद ने मुनिश्री के प्रति उन्नत भावों से मंगलभावना व्यक्त की।

महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण एवं तेयुप के सदस्यों, ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं व नवकार मित्र मंडल द्वारा विदाई गीत का संगान किया गया। स्नेहलता सेठिया ने 9३, पंकज सेठिया ने 99, कन्हैयालाल बैद ७, विनीत मालू ने ६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस अवसर

पर अनेक तैले, बेले, उपवास, पौषध, आयुर्विल, एकासन कर मंगलभावना अर्पित की। गांधीनगर सभा के पर्यवेक्षक मन्नालाल बैद सहित अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में श्रावकों की उपस्थिति रही। किशोर बैद, धनेश डूंगरवाल, अनिल बोथरा व रिषभ बैद को विशेष सेवा एवं बाबूलाल मालू व ज्ञानार्थी रितिका महनोत को तप हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री हेमराज राखेचा ने किया। जेटीएन प्रतिनिधि रिषभ बैद द्वारा सोशल मीडिया प्रसारण में सहयोग रहा।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, गांधीनगर सभा उपाध्यक्ष प्रेम छल्लाणी, श्रावक तेजकरण बैद, धर्मचंद चोरड़िया, सतीश जैन, निर्मल छल्लाणी, सुरेश चोपड़ा, अंकिता मालू, भारती रांका, सोनिया सिंघवी, विनीता सुराणा, किरण देवी छाजेड़ व अंजु बैद ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल-कोलकाता।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी रौनक भादानी के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेंद्र सेठिया व अनूप गंग ने विधि-विधानपूर्वक संपादित करवाया।

तेयुप की ओर से संस्कारकों ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया। रौनक भादानी ने तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता एवं दोनों जैन संस्कारों के प्रति हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

लिलुआ।

चुरू निवासी, बेलूड़ प्रवासी राकेश-अंजू देवी बांठिया के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अरुण नाहटा, राकेश राखेचा और राकेश सिंधी द्वारा संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के संगान से हुई। सुमन देवी श्यामसुखा ने तिलक लगाकर मंगलभावनाएँ प्रेषित की। तेयुप, लिलुआ की ओर से संगठन मंत्री मानव बैद ने को मंगलभावना पत्रक भेंट किया और बांठिया परिवार का आभार ज्ञापन किया। तेरापंथ किशोर मंडल के सह-संयोजक कुणाल चोपड़ा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

अहमदाबाद।

दिनेश कुमार सालेचा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक बाबूलाल चोपड़ा ने मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलभावना पत्र भेंट एवं महावीर भगवान स्तुति के सामूहिक संगान से विधि का समापन किया। सालेचा परिवार की ओर से संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में तेयुप मंत्री कुलदीप नवलखा, युवासाथियों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

गुरुग्राम।

सुजानगढ़ निवासी गुरुग्राम प्रवासी, हंसराज एवं कनकलता बांठिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक भरत बेगवानी व सुशील बैंगानी ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व भगवान महावीर स्तुति से हुई। संस्कारकों ने परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी जितेंद्र मुस्कान कात्रेला के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक भरत गोलछा, विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

सूरत।

सूरत प्रवासी विनीत कुंडलिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, प्रकाश डाकलिया, धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

उपस्थित पारिवारिकजनों ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

दो दिवसीय मंगलभावना समारोह का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सफल एवं संघप्रभावक चातुर्मास के उपलक्ष्य में तेरापंथी सभा एवं सभी संघीय संस्थाओं द्वारा दो दिवसीय मंगलभावना समारोह का आयोजन प्रारंभ हुआ। विभिन्न वक्ताओं ने मुनिश्री के प्रति मंगलभावना रखी।

मुनि दीप कुमार जी ने हाजरी का वाचन किया। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि मुनि दीप कुमार जी का समय प्रबंधन एवं अनुशासनबद्धता चातुर्मास

की सफलता की कहानी कह रहा है। मुनि काव्य कुमार जी ने थोड़े समय में अच्छा आध्यात्मिक विकास किया है, यह विजयनगर वालों के लिए गौरव का विषय है।

अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा कि मुनि दीप कुमार जी बहुत श्रम करते हैं। चातुर्मास संघप्रभावक रहा। सभी संघीय संस्थाओं की भी सक्रियता रही। अभातेयुप सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, अभातेयुप जैन संस्कार विधि सह-प्रभारी विकास बांठिया, तेयुप अध्यक्ष

राकेश पोखरणा, महिला मंडल अध्यक्ष मंजुदेवी गादिया, सभा उपाध्यक्ष सुरेश मांडोत, प्रेमदेवी भंसाली, आरआर नगर अध्यक्ष सुमन पटावरी, अभातेमम सदस्या मधु कटारिया आदि ने अपने विचार रखे।

तेरापंथ सभा, तेयुप ने संयुक्त गीत का संगान किया। महिला मंडल, कन्या मंडल, दीपिका गोखरू, सीमा पितलिया, सुवालाल चावत आदि ने गीत का संगान किया। चंचलदेवी मांडोत एवं अनीश बाबेल ने संवाद प्रस्तुत किया। संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।



जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा - वर्ष 2023



- परीक्षा दिनांक** : 7 जनवरी, 2024, रविवार, समय 2 से 4 (दो घंटे)
- परीक्षा स्थल** : स्थानीय ज्ञानशाला संचालन स्थल (तेरापंथ भवन)
- परीक्षार्थी** : ज्ञानशाला में अध्ययनरत बालक-बालिकाएँ।
- प्रश्नपत्र** : ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा प्रेषित प्रश्न-पत्रों के आधार पर मौखिक परीक्षा का पूरे देश में एक ही दिन, एक ही समय पर आयोजन।
- परीक्षा केंद्र** : प्राप्त आवेदनों के आधार पर ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा स्वीकृत परीक्षा केंद्र।
- प्रत्येक ज्ञानशाला में 'ज्ञानार्थी परीक्षा' का आयोजन अनिवार्य है। ज्ञानशालाओं के वार्षिक मूल्यांकन व चयन प्रक्रिया में इस बिंदु को ध्यान में लिया जाता है। सभा-संस्थाएँ इस दिन (7-1-2024) को भ्रमण या पिकनिक अथवा अन्य कोई कार्यक्रम आयोजित न करें।
- संपर्क** : ज्ञानार्थी परीक्षा हेतु **ज्ञानशाला प्रकोष्ठ परीक्षा विभाग संयोजक श्री सुरेंद्र लुणिया** का मो०नं० 9328033656 पर संपर्क कर सकते हैं।

सी०ए० सोहनराज चौपड़ा

(ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक)

मोबाइल : 9426171518



उपासना

(भाग - एक)

प्रस्तुति



ध्यान

समचित्तता

ध्यान की चौथी कसौटी है समचित्तता। सुख-दुःख-इन सारे शब्दों में संतुलन बनाए रखना समचित्तता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम लाभ और अलाभ को समान मानें। लाभ और अलाभ को सम कैसे मान सकते हैं? हुआ है लाभ, मान लेते हैं अलाभ। यह भी न्याय नहीं है। समचित्तता संतुलित और सम रहे। लाभ होने पर अहं न हो और अलाभ होने पर विषाद न हो। सामान्य स्थिति यह है-लाभ होने पर मनुष्य ज्यादा अकड़ में आ जाता है, अलाभ होने पर अधिक निराश हो जाता है। जब बहुत लाभ होता है, आकाश ही दिखाई देता है। धरती नहीं। जब अलाभ होता है, आकाश दिखना बंद हो जाता है, केवल धरती ही दिखाई देती है। यह स्थिति पैदा नहीं होनी चाहिए। हम आकाश को भी देखें, धरती को भी देखें। जो नीचा है, उसे भी देखें, जो ऊपर है, उसे भी देखें, अपनी स्थिति को संतुलित रखें। यह बहुत कठिन साधना है। दोनों स्थितियों में समचित्तता का निर्णय ध्यान के द्वारा ही संभव है। वह इसलिए है कि ध्यान के द्वारा चित्त का निर्माण होता है, पुराने संस्कार क्षीण होते हैं, नए संस्कारों की स्थापना होती है। जब तक चित्त का निर्माण नहीं होता, समचित्तता नहीं आती।

मानदंड प्रतिष्ठा का

एक प्रश्न होता है-प्रतिष्ठा का मानदंड क्या है? दूसरे लोग अच्छा मानें, सम्मान दें, यह प्रतिष्ठा का मानदंड है। दूसरे लोग ठीक नहीं मानते हैं, अधिमान नहीं देते हैं, यह प्रतिष्ठा की कमी का सूचक है। दूसरे लोग अच्छा मानते हैं, इसलिए मैं अच्छा हूँ। दूसरे लोग अच्छा नहीं मानते, इसलिए मैं अच्छा नहीं हूँ। व्यक्ति का अपना कोई मानदंड नहीं होता। जब तक यह मानदंड रहता है, समचित्तता का प्रश्न ही नहीं उठता। व्यक्ति यह सोचे-इसके लाभ से मेरा हित हुआ है या अहित, इसके चले जाने से हित हुआ या अहित? मुझे कुछ मिला और आत्मा का अहित हुआ तो यह मेरे लिए काम की बात नहीं है। धन चला गया, पदार्थ चला गया, किंतु उसके जाने से आत्मा का अहित नहीं हुआ। जब इस भूमिका पर चित्त का निर्माण होता है, तब व्यक्ति लाभ और अलाभ में सम रह सकता है। जब तक हम दूसरों के आधार पर निर्णय करें, समचित्तता की स्थिति घटित नहीं होगी। हम उस चित्त का निर्माण करें, जो पदार्थ से हटकर आत्मस्थ बने। हमारा मानदंड और कसौटी स्वयं की आत्मा का हित या अहित हो। इस स्थिति में समचित्तता का भाव विकसित होगा। गीता का शब्द है-स्थितप्रज्ञ। दशवैकालिक सूत्र का शब्द है-स्थितात्मा। यह ध्यान का बहुत बड़ा फल है।

परीषह-जय

ध्यान की पाँचवीं कसौटी है परीषह-जय। जैसे-जैसे ध्यान की स्थिरता बढ़ती है, वैसे-वैसे कष्ट सहने की क्षमता बढ़ती चली जाती है। भगवान् महावीर ने कितने कष्ट सहे। देवताओं द्वारा मारणान्तिक कष्ट दिए गए। उन कष्टों को सुनकर आश्चर्य होता है। महावीर ने वे कष्ट सहे थे ध्यान की अवस्था में। हम ध्यान की अवस्था से परे हटकर देख रहे हैं इसलिए हमें आश्चर्य होता है। यदि हम ध्यान की अवस्था में चले जाएँ तो फिर हमें आश्चर्य नहीं होगा। जो व्यक्ति ध्यान के द्वारा आत्मा की लीनता में चला जाता है, उसे शारीरिक कष्ट का भान भी नहीं होता। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं-व्यक्ति ध्यान में लीन हो गया, डॉक्टर ने ऑपरेशन कर दिया, एनेस्थेसिया का प्रयोग नहीं करना पड़ा। सम्मोहन और मूर्च्छा का प्रयोग किए बिना ऑपरेशन का कष्ट सहा जा सकता है। इसका रहस्य यह है-शल्यक्रिया शरीर में होती है और व्यक्ति चेतना के भीतर चला जाता है। शरीर में होने वाला कष्ट चेतना का स्पर्श ही नहीं कर पाता।

प्रभाव भक्ति का

आजकल कष्ट निवारण के लिए पेनकिलर का प्रयोग होता है। आज यह अनुसंधान हो रहा है-हमारे शरीर में भी पेनकिलर हैं। एंडोर्फिन जैसे रसायन हैं, जिन्हें सक्रिय कर पाएँ तो कष्ट सहना संभव हो जाए, उसके लिए शल्यक्रिया की जरूरत ही न पड़े। हमारे मस्तिष्क में एंडोर्फिन रसायन पैदा होता है। जो काम मरफिया का इंजेक्शन करता है, वही काम एंडोर्फिन करता है। वह रसायन कब पैदा होता है? जो व्यक्ति भक्ति में लीन हो गया, गहराई में चला गया, उसके एंडोर्फिन पैदा हो जाएगा, यह कष्ट को कम कर देगा, ऐसे अनेक लोगों को देखा है, जिनको बड़ा कष्ट था, कैसर जैसी भयंकर बीमारी थी, उन्हें तीर्थकरों की स्तुति, चौबीसी, आराधना आदि गीत सुनाए जाते, वे अपने भयंकर कष्ट को भूल जाते। इन गीतों-भजनों में लीन हो जाते। उन्हें यह बोध ही नहीं रहता-मैं किसी भयंकर बीमारी से ग्रस्त हूँ। दर्द कहाँ चला जाता है? कारण यही है-भक्ति में लीन हुआ, एंडोर्फिन की मात्रा बढ़ गई और कष्ट शांत हो गया। भक्ति, तत्त्वज्ञान, गहरा समर्पण, ध्यान-ये कठिनाइयों को मिटा देते हैं, कष्ट-सहन करने की क्षमता को बढ़ा देते हैं।

आज की भाषा

वैराग्य, तत्त्वज्ञान, निर्ग्रन्थता, समचित्तता और परीषह-जय-ये ध्यान के पाँच हेतु हैं। ध्यान के पाँच परिणाम ये हो सकते हैं-(१) तनावमुक्ति, (२) मनःप्रसाद, (३) संवेग-नियंत्रण, (४) संतोष, (५) अंतर्दृष्टि का विकास।

तनावमुक्ति

ध्यान का एक लाभ है-तनावमुक्ति। तनाव कम हो रहा है तो मानना चाहिए ध्यान सध रहा है। तनाव कम नहीं हो रहा है तो ध्यान भी सध नहीं रहा है। ध्यान की यह एक कसौटी है।

मनःप्रसाद

ध्यान का दूसरा लाभ है-मनःप्रसाद। मन की प्रसन्नता हो रही है या नहीं? अनेक व्यक्ति उदास और गमगीन रहते हैं। मानना चाहिए, उनके ध्यान सधा नहीं है। हर्ष और शोक इन दोनों से परे की स्थिति है प्रसन्नता।

संवेग-नियंत्रण

ध्यान का तीसरा लाभ है-संवेग-नियंत्रण। क्रोध आदि पर नियंत्रण हो रहा है या नहीं? यदि नियंत्रण हो रहा है, आवेश में कमी आ रही है तो ध्यान की सार्थकता है। वर्षों तक ध्यान करते रहें और आवेश वैसा ही बना रहे, प्रकृति में कोई परिवर्तन न आए तो ध्यान की निष्पत्ति पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। आवेश की न्यूनता ध्यान की एक कसौटी है।

संतोष

ध्यान का चौथा लाभ है-संतोष। आदमी संतुष्ट होता ही नहीं है। एक प्रमुख बीमारी है असंतोष। किसी से भी पूछा जाए, मिल मालिक हो या मजदूर, पिता हो या पुत्र, असंतोष सर्वत्र मुखर है। विद्यार्थी भी असंतुष्ट है और प्राध्यापक भी असंतुष्ट है। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, जो हर स्थिति में संतुष्ट रहते हैं। असंतोष और शिकायत करने वालों की कोई सीमा रेखा नहीं है। इससे मुक्ति मिल जाए, असंतोष मिट जाए, यह ध्यान की बड़ी उपलब्धि है।

अंतर्दृष्टि का विकास

ध्यान का पाँचवाँ लाभ है-अंतर्दृष्टि का विकास। हम केवल बाह्यदृष्टि के भरोसे न चलें। उसके माध्यम से व्यक्ति चलता भी है, किंतु ध्यान का परिणाम है अंतर्दृष्टि का विकास। अनेक लोग इस भाषा में बोलते हैं-यह मेरी आत्मा की आवाज है। व्यक्ति की चेतना में राग-द्वेष भरा है, कहीं से आएगी आत्मा की आवाज? जब राग-द्वेष से छुटकारा मिलेगा, तब यह कहने का अधिकार मिलेगा-यह मेरी आत्मा की आवाज है। जिसने भीतर झाँकना सीखा ही नहीं है, भीतर की आवाज कहीं से आएगी? ध्यान की कसौटी है अंतर्दृष्टि का विकास।

जब व्यक्ति ध्यान शुरू करता है, उसकी गहराई में जाता है, ये सारे परिणाम प्राप्त होने लग जाते हैं। यह अनुसंधान का एक महान् प्रयोग है। इससे जो निष्पत्ति आती है, जो अनुभव मिलता है, वह तर्क और बुद्धि से परे है।

नास्तिक से आस्तिक

जैन विश्व भारती में प्रेक्षाध्यान का शिविर था। एक युवक ने कहा-मैं आत्मा को नहीं मानता, मेरा आत्मा में कोई विश्वास नहीं है। क्या मुझे शिविर में प्रवेश मिलेगा? मैंने कहा-तुम आत्मा को मानो या न मानो। शिविर में ध्यान कर सकते हो। दस दिन का शिविर संपन्न हुआ। मैंने उस युवक से पूछा-भाई! शिविर कैसा रहा? उसने कहा-मैं नास्तिक बनकर आया था। आस्तिक बनकर जा रहा हूँ। जब मैं आया, तब आत्मा को सर्वथा अस्वीकार करता था। अब ऐसा लगता है, आत्मा है अवश्य।

यह सचाई कैसे मिली? इसका हेतु है अंतर्दृष्टि का विकास। जब अंतर्दृष्टि जाग जाती है, धर्म स्वयं एक सहज प्रेरणा बन जाता है, मनुष्य धर्म में रस लेने लग जाता है। बुद्धि और तर्क के इस युग में ध्यान का आलंबन लेना, ध्यान के द्वारा अनुभूति के स्तर पर पहुँचना आवश्यक है। जैसे-जैसे अनुभव जाएगा, बुद्धि और तर्क नीचे रह जाएँगे, धर्म स्वयंसिद्ध, प्रामाणिक और हमारे लिए सदा उपयोगी बन जाएगा।

मैत्री

मैत्री शब्द बहुत मीठा है। मित्र सबको अच्छा लगता है, शत्रु अच्छा नहीं लगता। मनुष्य इस आशंसा से जीता है कि मेरे अधिक से अधिक मित्र बनें। राग और द्वेष-इन दोनों से परे है मैत्री। व्यवहार के क्षेत्र में इस शब्द का बहुत प्रयोग होता है। नीतिकारों ने मैत्री शब्द की विवेचना की है। अध्यात्म के क्षेत्र में मैत्री का स्वतंत्र आशय है।

मैत्री का स्रोत

‘सबके साथ मैत्री करो’ यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है किंतु जब तक मैत्री की प्रक्रिया और मैत्री का दर्शन स्पष्ट नहीं होता, तब तक ‘मैत्री करो’ की बहुत सार्थकता और सफलता नहीं होती। मैत्री का संबंध है जन्म-मरण के साथ। कहा गया-जब तक जन्म-मरण का चक्र सामने नहीं होगा, मैत्री का स्रोत नहीं प्रवाहित होगा, मैत्री फलित नहीं होगी। बाहर से कुछ थोपा हुआ-सा लगेगा, भीतर का झरना बहेगा नहीं। मैत्री का स्रोत जन्म-मरण के चक्र में छिपा है।

भगवान् महावीर से पूछा गया-यह जीव सब जीवों के माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र आदि जितने संबंध हैं, उन रूपों में पैदा हुआ है?

महावीर ने कहा-हाँ, यह जीव सब जीवों में माता-पिता, भाई-बहन आदि संबंधों के रूप में एक बार नहीं, अनेक बार पैदा हुआ है।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

(पिछला शेष) **आवेग-विरोध**—यह प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव है कि वह क्रोध आदि आवेगों का वशवर्ती बन अनेक अप्रिय कार्य कर लेता है, जिसका परिणाम स्वयं के लिए तथा दूसरों के लिए भी दुःखद बन जाता है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक जीवन भी आवेगों से अछूता नहीं है। छोटे-बड़े सभी पर इसकी छाया है। बड़े व्यक्तियों का आवेग बड़े पैमाने पर सर्जित होता है, जिसका नतीजा भी बड़ा होता है। कलह, कदाग्रह, युद्ध आदि इसके प्रत्यक्ष निदर्शन हैं। आवेग का संयम बहुत कम व्यक्ति कर पाते हैं। मैं इसके प्रति सहज रहूँगा और इसके वशवर्ती नहीं बनूँगा—इस भावना से इसका निरोध कर इस पर विजय पाई जा सकती है।

शिथिलीकरण और संकल्प शक्ति—इनका प्रयोग भी मन को सबल बनाने में नितांत सहयोगी बनते हैं। शरीर को तनाव-मुक्त करना, रिलेक्स करना आटो-सजेशन—स्वतः सूचना के द्वारा-शरीर के प्रत्येक अंग तनाव मुक्त हो रहे हैं। इस सूचना के साथ मन भी जुड़ा हुआ हो और हमारा ध्यान भी शरीर के प्रत्येक अंग के प्रति सजग रहे तो धीरे-धीरे शरीर और मन दोनों शिथिल हो जाते हैं। शरीर मन का अनुगामी है। जैसा उसको मन सूचित करता है, वह उसी प्रकार ढल जाता है। इससे सहज ही मन की सबलता संवर्धित हो जाती है।

संकल्प शक्ति के अभ्यास से भी मन की दुर्बलता का निवारण होता है। व्यक्ति जैसी भावना करता है वह वैसा ही बन जाता है। मन शक्तिशाली हो रहा है, भय, कायरता व दुर्बलता दूर हो रही है—ऐसी भावना करनी चाहिए। मन में कभी भी क्षुब्ध विचारों का प्रवेश नहीं होने देना तथा नकारात्मक भावों से दूर रखना, मन को सशक्त बनाने के सहज सिद्ध प्रयोग हैं।

भगवान् प्राह

(५२) चिन्ताशोकभयक्रोधैः, आवेगैर्विविधैश्चिरम्।
संवेदनविचारैश्च, दुर्बलं जायते मनः॥

भगवान् ने कहा—चिन्ता, शोक, भय, क्रोध आदि विविध आवेग, चिरकालीन संवेदन और चिरकालीन विचार—ये मन को दुर्बल बनाते हैं।

(५३) दीर्घश्वासस्तथा चित्तस्यैकाग्रसन्निवेशनम्।
विचाराणां विरोधो वा, संवेदननियंत्रणम्॥

दीर्घश्वास, चित्त का एक आलंबन पर सन्निवेश, विचारों का निरोध, संवेदन-नियंत्रण, आवेग का निरोध, शिथिलीकरण और संकल्पशक्ति का अभ्यास—ये मनोबल को बढ़ाने के उपाय हैं।

(५४) आवेगानां सन्निरोधः, शिथिलीकरणं तथा।
संकल्पशक्तेरभ्यासः, मनोबलनिबन्धनम्॥ (युग्मम्)

दीर्घश्वास, चित्त का एक आलंबन पर सन्निवेश, विचारों का निरोध, संवेदन-नियंत्रण, आवेग का निरोध, शिथिलीकरण और संकल्पशक्ति का अभ्यास—ये मनोबल को बढ़ाने के उपाय हैं।

(५५) आत्मनः स्वात्मना प्रेक्षा, धर्म्यध्यानमुदीरितम्।
प्रकृष्टां भूमिमापन्नं शुक्लध्यानमिदं भवेत्॥

आत्मा के द्वारा आत्मा की प्रेक्षा को धर्म्यध्यान कहा गया है। प्रेक्षा जब उत्कृष्ट भूमि पर चली जाती है, तब शुक्लध्यान कहलाती है।

प्रेक्षा का अर्थ है—निर्विकल्प रूप से देखना, जिस देखने में राग-द्वेष न हो, संकल्प-विकल्प न हो, मात्र देखना ही हो, वह है प्रेक्षा। अपने द्वारा अपने को—आत्मा को देखना है। आत्मा की अनुभूति या साक्षात् उस शांत व निर्विकल्प अवस्था में ही होता है। फिर जो भी साधन है—प्रयोग हैं वे सब आत्मा से ही सन्निविष्ट हो जाते हैं। प्रत्येक प्रयोग लंबे अंतराल के बाद मन को अ-मन करते हैं। अ-मन अवस्था में द्रष्टा साक्षीरूप में खड़ा होता है और यह पकड़ सुदृढ़ होने पर सहज ही आत्मा की स्फुरण होने लगती है। समाधि या आत्मानुभव की प्रकृष्ट, प्रकृष्टतर स्थिति शुक्लध्यान—(ध्यान की उच्च-उच्चतम अवस्था) में परिणत हो जाती है।

(५६) व्याधिमाधिमुपाधिञ्च, समतिक्रम्य यत्नतः।
समाधिं लभते प्रेक्षाध्यानसिद्धिपरायणः॥

प्रेक्षाध्यान की सिद्धि में परायण व्यक्ति व्याधि, आधि और उपाधि का प्रयत्नपूर्वक अतिक्रमण कर समाधि को प्राप्त होता है।

प्रेक्षाध्यान की साधना में संलग्न साधक उत्तरोत्तर विकास करते हुए समाधि में स्थित हो जाता है। समाधि ध्यान की वह अवस्था है जहाँ मन, वाणी, शरीर, भावधारा आदि सब शांत हो जाते हैं। ऐसी निष्पन्न स्थिति का साधक 'साधो! सहज समाधि भली' कबीर की इस वाणी में जीने लगता है। वह व्याधि (शारीरिक कष्ट) आधि (मानसिक दुःख) और उपाधि (भावनात्मक कष्ट)—इन सबका सहज ही अतिक्रमण कर जाता है।

ध्यान का प्रारंभ काय-स्थिरता से होता है। शरीर अस्थिर है, चंचल है तो हमारा मन भी स्थिर नहीं

होता। साधक के लिए शरीर का स्थैर्य साधना भी आवश्यक है। अनुभवी पुरुषों ने कहा है—तीन घंटा एक आसन में स्थिर बैठने से आसन सिद्ध होता है। सिद्ध आसन का होना ध्यान के लिए उत्तम है। शरीर की अस्थिरता मन को एक विषय में केंद्रित नहीं होने देती। विकेंद्रित मन शक्ति के ऊर्ध्वगमन में अवरोधक है।

काया की स्थिरता के लिए कायोत्सर्ग और काय-गुप्ति का अभ्यास अपेक्षित है। काय-गुप्ति का अर्थ है—शरीर की हलन-चलन का गोपन-संयम। अभ्यास के द्वारा इसे साधा जा सकता है। दृढ़ अभ्यास से स्थिरता सिद्ध हो जाती है। कायोत्सर्ग शरीर को स्थिर करता है और साथ-साथ भेदविज्ञान का हेतु भी बनता है। काय-उत्सर्ग इन दो शब्दों के संयोग से कायोत्सर्ग बनता है। जिसका अर्थ है—शरीर का विसर्जन करना, शरीर के प्रति कुछ समय उदासीन हो जाना, शरीर के स्पंदनों-गति आदि को पूर्णतया शांत कर देना। महर्षि रमण के जागरण का मूल केंद्र-बिंदु यही प्रयोग बना। उन्होंने देखा—शरीर मृतवान् पड़ा है। मैं उसे देख रहा हूँ। द्रष्टा भिन्न और दृश्य भिन्न है। दोनों एक नहीं हैं। दोनों के एकत्व की ग्रंथि खुल गई और वे सम्यक् बोध को प्राप्त हो गए।

देह की स्थिरता से आस्रव—कर्म आगमन का मार्ग पतला होता है, द्वार बंद होने लगता है। कर्म का आगमन ही संसार का मूल है। कर्म-वासना की क्षीणता से संसार क्षीण होता है। देह की स्थिरता साधना में कितनी अपेक्षित है, इससे यह स्वतः सिद्ध होती है।

(५७) कायोत्सर्गः कायगुप्तिः देहस्थैर्याय जायते।

स्थैर्यं सम्यक् गते काये, आस्रवः प्रतनुर्भवेत्॥

कायोत्सर्ग और कायगुप्ति देह की स्थिरता के लिए है। काया के भली-भाँति स्थिर होने पर आस्रव पतला हो जाता है।

(५८) श्वासादीनां च संप्रेक्षा, मनः संयममात्रजेत्।

एकाग्रये सघने जाते, ध्यानं स्यान्निर्विकल्पकम्॥

श्वास आदि की संप्रेक्षा से मन का संयम प्राप्त होता है। मन की एकाग्रता के सघन होने पर निर्विकल्प ध्यान सिद्ध हो जाता है।

निर्विकल्प ध्यान के लिए सघन एकाग्रता की अपेक्षा रहती है। श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, सुषुम्ना नाड़ी-स्थित चैतन्य केंद्रों (चक्रों) पर, अंतर्मौन आदि किसी भी एक आलंबन पर लंबे समय तक मन को स्थिर करने से सघती है, इसलिए साधक में तीव्र साधना की पिपासा हो, उन्हें एक ही प्रयोग पर अधिक श्रम करना चाहिए, उसे ही अपना ध्यान-बिंदु बनाना चाहिए, इससे निश्चित ही निर्विकल्प की सिद्धि होती है तथा अनेक अनुभवों की प्राप्ति भी होती है।

(५९) अध्यवसायः सूक्ष्म चित्, लेश्या भावः ततः स्फुटम्।

चित्तं स्थूलशरीरस्थं, इमाः चैतन्यभूमयः॥

अध्यवसाय सूक्ष्म चेतना है। लेश्या अथवा भाव की चेतना उससे प्रस्फुट-व्यक्त है। स्थूल शरीर में काम करने वाली चेतना चित्त है। ये चैतन्य की भूमिकाएँ हैं।

चेतना एक है। वह अनावृत नहीं है इसलिए उसकी रश्मियाँ सीधी प्रसारित नहीं हैं। उसे माध्यम चाहिए। वह कई माध्यमों से प्रकट होती है। उसके सबसे निकट का सूक्ष्मतम माध्यम है—अध्यवसाय। चेतना की पहली हलचल का यही उद्गम है। अध्यवसाय अथाह जलराशि के नीचे बुदबुदे के रूप में उठने वाला प्रथम स्पंदन है। उसका आकलन करना दुःसाध्य है। उसके बाद वह लेश्या और भाव के रूप में प्रस्फुट होता है। कृष्ण, नील, लाल, सफेद आदि रंगों के रूप से पहचाना जाने वाला परिणाम लेश्या है। भाव उससे कुछ ओर अधिक व्यक्त है, किंतु इन दोनों का बोध साधारण जनों के गम्य नहीं है। हालाँकि वैज्ञानिक उपकरणों ने इसे पकड़ने का प्रयास किया है, सफलता भी प्राप्त की है।

चित्त चेतना का स्पष्ट रूप है। स्थूल शरीर में वही काम चित्त से ही मन द्वारा संचालित होता है। वाणी और शरीर पर नियमन करने वाला मन है। चेतना की ये भूमिकाएँ हैं।

अध्यवसाय शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार का है। अशुद्ध अध्यवसाय से आगे का समग्र ज्ञान अशुद्ध रूप में ही कार्यशील होता है। रजस् और तमस् के रूप में इनकी परिणति देखी जा सकती है। अशुद्ध वृत्तियाँ जीवन विकास में सहगामी नहीं बनती। अशुद्ध जीवन वर्तमान और भविष्य दोनों के आनंद को लीलने वाला होता है। साधक का पहला कार्य है कि वह अशुद्ध अध्यवसायों को प्रशस्त करने का प्रयत्न करें। अध्यवसाय शुद्ध के बिना न मन की शुद्धि होती है, न भाव की और न लेश्या की। साधक को इसे स्मृति में रखना चाहिए कि मुझे सबसे पहले मन को पवित्र-विशुद्ध बनाना है। मन के विशद-प्रशस्त होने के साथ समूचा तंत्र शुद्धि की दिशा में गतिशील हो जाता है। संत कबीर ने कहा है—

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।

पीछे पीछे हरि फिरै, कहत कबीर कबीर॥

यही, इसी सत्य का चित्रण है।



महिला मंडल के विविध आयोजन



द पावर ऑफ सेल्फ पावर कार्यशाला का आयोजन

जयपुर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' का आयोजन जयपुर शहर तेमम द्वारा अणुविभा के महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित किया गया। शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य एवं साध्वी मधुलता जी के निर्देशन में आयोजित शिल्पशाला में साध्वीश्री द्वारा नमस्कार मंत्र के समुच्चारण के पश्चात मंडल की सदस्यों ने गीत का संगान किया।

संगोष्ठी की मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित थी जीवन-विज्ञान प्रशिक्षिका अणुव्रत समिति, जयपुर की पूर्व अध्यक्षा रीना गोयल, महिला मंडल की अध्यक्षा नीरू मेहता ने समागत बहनों का स्वागत किया। साध्वी मधुलता जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति असीम शक्ति और अनंत संभावनाओं का पुंज है। पर वे अधिकांश सुषुप्त अवस्था में रहते हैं। अपेक्षा है अपनी शक्तियों को पहचानें, आत्म विश्वास जगाएँ, सत्संकल्प और सत्पुरुषार्थ करें। साध्वीश्री जी ने कहा कि अनुप्रेक्षा के नियमित अभ्यास और प्रयोग से असंभव प्रतीत होने वाला कार्य भी संभव और सुगम हो सकता है। यह कभी न सोचें कि मैं यह कार्य नहीं कर सकता। इसके विपरीत आत्मविश्वास के साथ रहें।

मुख्य वक्ता रीना गोयल ने सात बिंदुओं के माध्यम से सहज-सरल भाषा में समझाया कि हम अपनी सोई हुई शक्तियों को कैसे जगाएँ और कैसे शक्ति संपन्न बनें। आप स्वयं के लिए कुछ समय निकालें। आत्मविश्वास जगाएँ। प्रसन्न रहें। सकारात्मक सोचें।

कार्यक्रम में अभातेमम की मुख्य न्यासी विमला दुगड़, जयपुर मंडल की पूर्व अध्यक्षा राजश्री कुंडलिया, मंडल की सेवा प्रभारी स्नेहलता डोसी, कौसल्या जैन सहित अनेक बहनों ने भाग लिया। महिला मंडल की मंत्री नीलिमा बैद ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन चंचल दुगड़ ने किया।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह

टिटिलागढ़।

अभातेमम के निर्देशानुसार दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम में तेमम ने समणी

स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मिलेट्स प्रतियोगिता, द पावर ऑफ सेल्फ पावर, कैसे करें मंडल को रोशन, पारंपरिक वेशभूषा के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुभद्रा जैन के सुमधुर मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने कहा कि श्रमदान एवं श्वास कंट्रोल के द्वारा आप अपनी सुप्त एनर्जी को जागृत कर अपनी सेल्फ पावर को बढ़ाएँ और अपने अंतस के दीप को जलाएँ। अपनी सोच को पॉजिटिव रखें।

कृष्णा जैन ने अपने विचार रखे। प्रांतीय अध्यक्ष मुकेश ने दीपावली की शुभकामनाएँ दी। पारंपरिक वेशभूषा के लिए खुशबू जैन को पुरस्कृत किया गया। मिलेट्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कंचन जैन तथा द्वितीय स्थान पर बहन संतोष जैन एवं सरोज जैन एवं तृतीय स्थान पर रीना जैन रही। विजेता बहनों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। अध्यक्षा बॉबी जैन, मुकेश जैन एवं सिंधीकेला की अध्यक्ष पुष्पा जैन एवं सभी अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की कोषाध्यक्ष पूजा जैन ने किया।

द पावर ऑफ रीडिंग एंड द पावन ऑफ सेल्फ पावर कार्यशाला का आयोजन

मैसूर।

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार 'द पावर ऑफ रीडिंग' एवं 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' कार्यशाला का आयोजन तेमम द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्षा लक्ष्मी भटेवरा ने सबका स्वागत किया। मुनि प्रियांशु कुमार जी ने स्वाध्याय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि स्वाध्याय से कर्मों की निर्जरा होती है और पढ़ने से ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है। मुनिश्री ने कहा कि संकल्प शक्ति दृढ़ हो तो हम मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य को भी हासिल कर सकते हैं।

मुख्य वक्ता डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस जानवी ने 'द पावर ऑफ सेल्फ

पावर' को सुंदर ढंग से तथा कहानी के माध्यम से विस्तार से समझाया। हम क्राइम से कैसे बच सकते हैं इसकी भी जानकारी दी। विशेष वक्ता जीएसटी कमिश्नर प्रियंका एन० ने 'द पावर ऑफ रीडिंग' के बारे में अपने अनुभव से सभी को संक्षिप्त जानकारी दी। लगभग ७५ भाई-बहन कार्यशाला में संभागी बने। मुख्य अतिथि का सम्मान सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, मदन मारू, लक्ष्मी भटेवरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेखा पितलिया और आभार मुस्कान नौलखा ने किया।

आत्मशक्ति शिल्पशाला का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अभातेमम द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ सेल्फ पावर' शिल्पशाला का तेमम, हैदराबाद द्वारा समायोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने सौंदर्य का प्रदर्शन करना चाहता है। बाह्य सौंदर्य प्रकृति प्रदत्त होता है। रहन-सहन, वेशभूषा सौंदर्य का प्रतीक है। पर महत्त्वपूर्ण बात है—अपने व्यवहार, विचार और आचार को सुंदर बनाएँ। साध्वीश्री जी ने कहा कि स्वार्थी व्यक्ति आत्मविश्वासी नहीं होता, आत्मविश्वासी व्यक्ति ही सबसे सुंदर होता है। खुद पर भी विश्वास करें और दूसरों पर भी विश्वास करें।

तेमम की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि व्यक्ति अनंत शक्ति संपन्न होता है, पर वह अपनी शक्ति का भरोसा नहीं करता।

दूसरों में शक्ति का दर्शन करता है। अपने हौंसले बुलंद रखने वाला ही सृजनशील सपनों को साकार कर सकता है। आवश्यकता है शक्ति प्रबंधन की कला का ज्ञान हो। कार्यक्रम की संयोजिका निशा दुगड़, संतोष गुजरानी थे।

लगभग २५० श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक के साथ शिल्पशाला को जानने का प्रयत्न किया। ऋषभ चिंडालिया ने कहा कि साध्वीश्री जी की प्रेरणा से किशोर मंडल निरंतर गतिशील हैं। संयोजक खुशाल भंसाली आदि किशोरों ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन

तिरुपुर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित महिला मंडल द्वारा दीपावली स्नेह मिलन समारोह कार्यक्रम साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पारंपरिक धन्य प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर क्रमशः ऐश्वर्या दुगड़, ज्योति सुराणा एवं रचना पटावरी ने प्राप्त किया। पारंपरिक परिधान प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः सोनम आंचलिया, प्रतिभा बोथरा एवं नेहा डागा ने प्राप्त किया। कैसे कर सकती हैं बहनें मंडल को रोशन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय क्रमशः रेखा सिंघवी एवं खुशबू जैन रहे। मंडल की बहनों द्वारा नाटिका की प्रस्तुति दी गई। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी

बहनों को मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। बहनों की उपस्थिति अच्छी रही। निर्णायक की भूमिका अलका भंडारी, चंदा सेठिया, उज्ज्वल जैन एवं कल्पना नंदोल ने निभाई। कार्यक्रम का संचालन उपासिका संजू दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

शांत सहवास कार्यशाला का आयोजन

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में शांत सहवास कार्यशाला जिसका विषय—'सास-बहू का साथ : कैसे लाएँ खुशियों की सौगात' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेमम द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि सास-बहू का रिश्ता एक ऐसी जोड़ी का निर्माण करता है जिसकी मजबूती न केवल पारिवारिक संगठन का आधार बनती है। अपितु घर के हर सदस्य में अपनत्व एवं उत्साह का संचार करती है। स्वच्छंदता और विघटन के इस दौर में प्रत्येक सास अनुशासनपूर्वक बहु को बेटी का प्यार दे और बहु अपनी सास को इतना सम्मान दे कि अलग-अलग रहने की कभी नौबत नहीं आए।

साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि सास बहू को खुशी से रहने के लिए एडजेस्टमेंट, मैनेजमेंट की अपेक्षा है। इसी क्रम में किरण देवी धारीवाल, गुलाबी देवी, मंजू देवी फुलफगर, राजेंद्र फुलफगर, श्वेता भंडारी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सुनीता देवी बेताला ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

जीवन विज्ञान कार्यक्रम का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में जीवन विज्ञान विभाग द्वारा निर्देशित महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस (जीवन विज्ञान दिवस) आयोजित किया गया। अणुव्रत समिति द्वारा मॉडर्न इंग्लिश हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों तथा इनसे होने वाले फायदों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान बताया गया कि महाप्राण ध्वनि से याददाश्त, एकाग्रता आदि बढ़ती है। समिति ने प्राचार्या को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाने के लिए निवेदन किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय की प्राचार्या द्वारा समिति के सदस्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग बैद, मंत्री संजय चोरड़िया, संगठन मंत्री रंजू बरड़िया, निवर्तमान अध्यक्ष एवं प्रशिक्षक बजरंगलाल डोसी, प्रशिक्षिकाएँ संगीता बैद व कविता बांठिया के साथ ही इंदु डागा उपस्थित थी। विद्यालय की ओर से अपर्णा बैंगानी ने समिति को धन्यवाद दिया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

गुलाबबाब, पूर्णिया।

मुनि रमेश कुमार जी के गुलाबबाग में सफलतम चातुर्मास समाप्ति पर नेपाल-विहार तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन स्थित प्रज्ञा सभागार में आयोजित किया गया। इस समारोह में तेरापंथ समाज की राष्ट्रीय व प्रांतीय सभा संस्थाओं के पदाधिकारी एवं विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर नेपाल-विहार तेरापंथ सभा द्वारा अनेक तपस्वी भाई-बहनों का अभिनंदन किया गया।

मंगलभावना समारोह में मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि हवा, वृक्ष की छाया और बरसात सबके लिए होती है। किसी तरह का किसी के साथ भेदभाव नहीं करती, वैसे ही संत व धर्म सबके लिए एक समान है। संत किसी में भेदभाव नहीं करते। मैं संत हूँ सबके कल्याण के लिए मंगलकामनाएँ करता हूँ। मुनिश्री ने आगे

कहा कि नेपाल-विहार तेरापंथ सभा एक सक्रिय, जिम्मेदार, संघ सेवा में समर्पित संस्थान है। एक सक्षम प्रांतीय संस्था है। वर्तमान अध्यक्ष भैरूदान जैन व महामंत्री वीरेंद्र संचेती सदैव चारित्रात्माओं की सेवा आदि में तैयार रहते हैं।

मुनि रमेश कुमार जी ने महामंत्रोच्चार से समारोह का शुभारंभ किया। स्थानीय तेममं ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभा, गुलाबबाग के अध्यक्ष सुशील संचेती ने कहा कि मुनिश्री का चातुर्मास तो गुलाबबाग में चल रहा है, हमें लगा पूरे चौखले का चातुर्मास है। नेपाल-विहार तेरापंथ सभा का भी हमें भरपूर सहयोग मिला।

तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नेमचंद वैद ने कहा कि हमारा जीवन भी ऐसा हो हम धर्मसंघ के लिए कुछ करें। चातुर्मास में आयोजित प्रवचनमाला आदि सभी कार्यक्रम को स्मरण करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

नेपाल-विहार तेरापंथ सभा के

अध्यक्ष भैरूदान भूरा ने सफलतम चातुर्मास संपन्नता पर कृतज्ञता व्यक्त की। अभातेयुप के महामंत्री अमित नाहटा ने कहा कि सफल चातुर्मास एवं मुनिद्वय द्वारा जो श्रम हुआ है वह स्तुत्य है। आप जिन क्षेत्रों में विचरण करेंगे संघ को मजबूती मिलेगी। चास बोकारो तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष मदन चोरड़िया, कटिहार तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बुधमल संचेती, अररिया आर०एस० तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राजेंद्र बेगवानी, फारबिसगंज तेरापंथ सभा के अध्यक्ष निर्मल मरोठी, किशनगंज सभा के अध्यक्ष विमल दफ्तरी, छातापुर से हीरालाल बाफना आदि अनेक वक्ताओं ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

दीपक समदड़िया फारबिसगंज ने गीत प्रस्तुत किया। समारोह का संचालन नेपाल-विहार तेरापंथ सभा के महामंत्री वीरेंद्र संचेती ने किया। स्थानीय तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष मनोज पुगलिया ने आभार ज्ञापित किया।

तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा द्वारा तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि आगमों में बताया गया है कि तपस्या द्वारा पूर्व में संचित कर्मों की निर्जरा होती है। जिस व्यक्ति का मनोबल मजबूत होता है, वही तपस्या कर सकता है। जैन इतिहास में बड़ी-बड़ी तपस्याओं के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि तपस्या द्वारा कर्म निर्जरा के साथ-साथ व्यक्ति सच्चे सुख की अनुभूति करता है। निष्पृह भाव से की गई तपस्या से व्यक्ति मोक्षगामी बनता है। जिस प्रकार सोना तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार तपस्या द्वारा आत्मा निर्मल बनती है। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। समारोह का शुभारंभ सामूहिक महामंत्र द्वारा किया गया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, तेरापंथी सभा के परामर्शक विमल चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, तेयुप मंत्री भरत गोलछा, प्रकाश महनोत ने तप अनुमोदना करते हुए अपनी भावना व्यक्त की। नवरतन बोथरा, मांगीलाल लुणिया, पवन छाजेड़, मनोहरलाल नाहटा, जीवराज श्यामसुखा, प्रकाश भंसाली, चंद्रप्रकाश राखेचा, त्रिलोकचंद बाफना द्वारा तपस्वियों को अभिनंदन पत्र व साहित्य द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा के मंत्री रतनलाल छल्लाणी ने बताया कि चातुर्मास काल में आठ व आठ से अधिक तपस्या करने वाले ५८ तपस्वियों का अभिनंदन किया गया। तपस्या करने वालों में ८ वर्ष के बच्चे से लेकर ८० वर्ष तक के बुजुर्ग शामिल हैं। तपस्वियों में ८ दिन की तपस्या करने वाले एवं ३० दिन की तपस्या करने वाले भी हैं।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

औरंगाबाद।

कार्यकर्ता वह होता है जो स्वहित के साथ-साथ समाज व संघहित में कार्य करता है। कार्यकर्ता का मतलब ही होता है—कार्य को करने वाला। कार्यकर्ता की पहचान नाम से नहीं काम से होती है। कार्यकर्ता कार्यक्रम को नहीं कार्य को अधिक महत्त्व देता है। उक्त विचार मुनि अर्हत कुमार जी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि कार्यकर्ता का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है—कर्तव्य बोध। अपने कर्तव्य को, अपनी

जिम्मेदारी को समझना। अपने समय का विसर्जन कर, अपने स्वार्थ का विसर्जन कर, संघ के विकास के लिए अपने संपूर्ण जीवन का बलिदान देना ही एक कार्यकर्ता की पहचान है। जिसके व्यवहार में सौम्यता, विचारों में दूरदर्शिता, चिंतन में सकारात्मकता, कार्य में नूतनता, चारित्र में पवित्रता है, धर्म में सक्रियता है वही कार्यकर्ता है।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि कार्यकर्ता भले कम हो पर उनका उत्साह और उमंग कभी कम न हो। मुनि जयदीप

कुमार जी ने कहा कि कार्यकर्ता वही होता है, जो अपने कार्य के प्रति समर्पित और अपने कर्तव्य के प्रति सजग होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की गीतिका द्वारा हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा ने दिया। अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुभाष नाहर ने अपने विचार रखे।

आभार ज्ञापन सभा के मंत्री आनंद दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन रंजीता दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में सराहनीय उपस्थिति रही।

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप के महत्त्वपूर्ण आयाम वीतराग पथ कार्यशाला का अभातेयुप के सत्र-२०२३-२५ का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

वीतराग पथ कार्यशाला में मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि वीतरागता हमारे जीवन का उच्चतम आदर्श है। आदर्श जितना ऊँचा होगा, जीवन उतना ही ऊँचा होगा। वीतराग बनने के लिए कषायों पर विजय प्राप्त करना जरूरी है। मुनि काव्य कुमार जी ने कार्यशाला पर विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण संगान से हुआ। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि मोक्ष मार्ग पर बढ़ते रहने हेतु वीतराग पथ कार्यशाला की उपयोगिता सदैव रहेगी। इस अवसर पर अभातेयुप से विकास बांठिया, महिला मंडल उपाध्यक्षा सुमित्रा बरड़िया, तेयुप पूर्व

अध्यक्ष राकेश दुधोड़िया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर परिषद के उपाध्यक्ष प्रवीण गन्ना, संगठन मंत्री पवन बैद, कोषाध्यक्ष अशोक मारु, तेयुप पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कमलेश चौपड़ा ने किया। इस कार्यशाला में लगभग १२५ लोगों की सहभागिता रही। आभार ज्ञापन सहमंत्री संजय भटेवरा ने किया।

♦ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

— आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्म दिवस समारोह

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का ११०वाँ जन्मोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण ममता देवी सेठिया ने सुमधुर गीतिका से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी २०वीं सदी के एक ऐसे महान सूर्य थे, जिन्होंने मानवीय क्रांति के रूप में अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। इसलिए उन्हें भारत ज्योति, राष्ट्रसंत, युगप्रधान जैसे अलंकरणों तथा राष्ट्रीय एकता जैसे पुरस्कारों से नवाजा गया।

सभा अध्यक्ष ताराचंद धारीवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। इसी क्रम में गुलाबदेवी वैद, सुमन देवी वैद, किरण देवी धारीवाल ने गीतिका से प्रस्तुत की। राजेंद्र फुलफगर ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। रात्रि में एक शाम तुलसी के नाम भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

वीतरागता की दिशा में करें प्रस्थान

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में किया गया। मुनि हिमांशु कुमार जी के मंगल मंत्रोच्चार एवं मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। तेयुप अध्यक्ष रजत वैद ने अभातेयुप एवं उपस्थित जनमेदिनी का स्वागत किया।

अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने युवा शक्ति को वीतराग भाव के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि हेमंत कुमार जी ने जीवन में मुमुक्षा भाव रखने, धर्म के प्रति श्रद्धावान बनने की प्रेरणा दी। मुनि हिमांशु कुमार जी ने वीतरागता के बाधक एवं साधक तत्त्वों की जानकारी दी। कार्यक्रम में अभातेयुप के साथी, तेयुप, बैंगलुरु के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। संयोजक ऋषभ सेठिया का श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री दीपक सुराणा ने किया।



धर्म रूपी पौधे को सिंचन देते रहना

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी का शाहदरा के ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास की परिसंपन्नता के पश्चात ओसवाल भवन से मंगल विहार हुआ। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल, संस्था शिरोमणी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुख सेठिया सहित सैकड़ों व्यक्ति अणुव्रत रैली के साथ साध्वीवृंद के विहार में सहयात्री बने। साध्वीश्री जी का प्रथम विहार विनोद-प्रमोद बैद के निवास स्थान पर हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने राजा प्रदेशी के आख्यान का वाचन करते हुए कहा कि अपने जीवन में सम्यक् ज्ञान रूपी दीपक को हमेशा प्रज्वलित रखना, धर्म रूपी पौधे को सिंचन देते रहना। धर्म रूपी पौधे को कभी मुरझाने न देना। अध्यात्म की सौरभ से जीवन को सुवासित रखना।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि संघ व संघपति हमारे प्राण, त्राण एवं शरण हैं। मैं पूरे श्रावक समाज से कहना चाहती हूँ आप सबकी संघभक्ति व गुरुभक्ति बढ़ती रहे। आस्था व समर्पण का रंग हर पल आपकी रंगों में दौड़ता रहे। मर्यादा व अनुशासन का कवच पहनकर संघ सेवा करते रहना। पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर हमें शाहदरा क्षेत्र प्रदान किया। शाहदरा, दिल्ली का विशिष्ट क्षेत्र है। श्रावक-श्राविकाएँ साताकारी हैं। आप सभी ने हमारे दिल में विशेष स्थान बनाया

है। हमारे चातुर्मास का सवाया लाभ लिया है। जप-तप व धर्म-ध्यान की गंगा बही है। अब उस गंगा के निर्मल जल से आत्मा को अभिसिंचित करते रहना।

साध्वीश्री जी ने कहा कि मेरे पचास वर्ष के संयम पर्याय में विहार में पहली बार दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष एवं महासभा के अध्यक्ष आए हैं। विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल भक्त हृदय हैं। इनके भीतर आस्था व भक्ति का ज्वार हमने देखा है। हमारे प्रवास में लगभग आठ बार उन्होंने सेवा उपासना का लाभ लिया है। इनको श्यातर का लाभ भी प्राप्त हुआ है। बड़े चिंतनशील, समयज्ञ एवं सफल राजनेता हैं। महासभा अध्यक्ष बड़े निर्मल, सहज, शालीन व्यक्तित्व के धनी हैं।

विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि आपके भीतर माँ-सी ममता है। मैं आपके प्रवचनों से बड़ा प्रभावित हूँ। आज भी आपका प्रवचन सुनने आया हूँ। आपकी यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो।

महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने कहा कि कुछ चातुर्मास साधना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हैं तो कुछ चातुर्मास संघ प्रभावना की दृष्टि से उपलब्धि भरे रहते हैं। साध्वी अणिमाश्री जी का चातुर्मास साधना एवं संघ प्रभावना दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा है। ऐसा मैं दिल्ली के श्रावक समाज के मुख से सुन रहा हूँ। जन-जन के मुख पर आपका नाम है। हम मंगलकामना करते हैं आप

निरामय रहते हुए यूँ ही संघ प्रभावना करते रहें।

साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत का संगान कर सबसे विदा लेते हुए श्रावक समाज से अवरुद्ध कंठ से खमतरखामणा किया। भरे मन से सभी ने साध्वीश्री जी को विदाई दी। सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, मंत्री सुरेश सेठिया ने विचार रखे।

साध्वी अणिमाश्री जी की पुस्तक 'अमृत का झरना' अंग्रेजी में अनुवाद साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से किरण बरड़िया ने किया। 'फाउंडेशन ऑफ अमृत' पुस्तक का लोकार्पण कुछ दिन पूर्व जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में समर्पित कर दिया। उसी पुस्तक को विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल, महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत व स्थानीय पदाधिकारियों ने साध्वीश्री जी के श्रीचरणों में उपहृत किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि साध्वी मंगलप्रज्ञा जी मेरी अनुजा भगिनी हैं, उन्होंने बड़ा काम किया है। किरण बरड़िया का श्रम मुखर हुआ है। जैन विश्व भारती ने पुस्तक को प्रकाशित कर साहित्य जगत की सेवा की। विनोद, सोनू बैद ने साध्वीश्री जी के अपने घर पर पदार्पण पर स्वागत करते हुए हार्दिक आभार व्यक्त किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

जीवनशैली को सरस बनाने के लिए संयम जरूरी

गंगाशहर।

जीवनशैली को सरस बनाने के लिए संयम जरूरी है। संयम स्वस्थ जीवन के लिए संजीवनी बूटी है। जहाँ संयम है, वहाँ इंसानियत के दर्शन होते हैं। संयम को मुक्ति का सच्चा पथ बतलाया गया है। संयम के साथ विवेक जुड़ जाता है तो व्यक्ति जीवन में शांति का अवतरण हो जाता है। संयम की साधना से परम विशुद्ध लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। यह विचार मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने ओसवाल पंचायत भवन में आयोजित विशेष कार्यक्रम में संयम जीवन की उपयोगिता पर व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि जीवन को कलात्मक, सुंदरतम, शक्तिशाली व सफलतम बनाने के लिए संयम सर्वश्रेष्ठ है। धर्म की, संयम की आराधना सर्वहिताय, सर्वसुखाय होती है। अतः संयम की साधना करें, क्योंकि शुद्ध साधना से ही शुद्ध लक्ष्य की प्राप्ति संभव है। रामलाल सेठिया जीवन के उत्तरार्द्ध में संयम साधना को जीवन में अग्रसर करते हुए एकांत साधना का लक्ष्य बनाकर श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं।

इस अवसर पर बरड़िया परिवार की बहनों ने सामूहिक गीत का संगान किया। पर्यावरण राष्ट्रीय संयोजिका डॉक्टर नीलम जैन ने विचार व्यक्त किए। तेमम भीनासर की अध्यक्ष मोनिका सेठिया, तेरापंथी महासभा, कोलकाता से उपाध्यक्ष विजय चोपड़ा, तेमम, कन्या मंडल प्रभारी हीरा नौलखा, इंद्रचंद्र सेठिया, रामलाल सेठिया ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सुरभि नाहटा ने किया।

आओ करें श्रुत की आराधना

तिरुपुर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में श्रुत पंचमी के अवसर पर 'आओ करें श्रुत की आराधना' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि आज के दिन कोई ज्ञान पंचमी, कोई लाभ पंचमी और कोई श्रुतपंचमी कहता है। ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। नग्न सुई जैसे गुम गई तो पुनः उसका मिलना बड़ा मुश्किल होता है पर धागे में पिरोयी हुई सुई तुरंत मिल जाती है। वैसे ही जिसके पास सम्यक् दर्शन रूपी ज्ञान है वह अन्य पथ पर भटक नहीं सकता। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करने से ही ज्ञान का आवरण दूर हो सकता है। जीवन पथ निर्वाह करना है तो धन का संग्रह चाहिए और जीवन का निर्माण करना है तो ज्ञान का संग्रह चाहिए।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि इहलोक और परलोक दोनों भवों में साथ चलने वाली वस्तु है-ज्ञान। ज्ञान के तीन प्रकार हैं-किताबों से, अनुभव से, अंतरमन से। ज्ञान को विनय और बहुमान से पढ़ें। प्रतिदिन पढ़ने पर भी यदि याद न हो तो निराश हुए बिना पढ़ते जाएँ।

साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने जप से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वीश्री जी ने ज्ञान से संबंधित अनेक मंत्रों का उच्चारण करवाया। कुछ छोटे-छोटे प्रयोग भी साध्वीश्री जी ने बताए। काफी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। महासभा सदस्य प्रकाश दुगड़ एवं उपासिका संजू दुगड़ ने विचार व्यक्त करते हुए गीतिका प्रस्तुत की।

नमस्कार महामंत्र जप अनुष्ठान संपन्न

हैदराबाद।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से भाग्यनगर में नमस्कार महामंत्र का प्रतिदिन 93 घंटे जप का क्रम चला। नमस्कार महामंत्र का लगातार 5 महीने 93 घंटे घर-घर आध्यात्मिक आरोहण जप अनुष्ठान हुआ। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में नवकार मंत्र महायज्ञ का समापन समारोह तेरापंथ भवन में 'आध्यात्मिक आरोहण अनुष्ठान' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने श्रावक समाज को जैन प्रभावक मंत्रों के द्वारा सामूहिक अनुष्ठान करवाया।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि नमस्कार महामंत्र जैन परंपरा का महत्त्वपूर्ण मंत्र है। यह सुरक्षा कवच की तरह है जो विघ्नों, समस्याओं का निवारण करता है। इस महामंत्र की आराधना करने वाला विकट परिस्थितियों में भी शांति को प्राप्त करता है। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र की अनेक ऐतिहासिक

चमत्कारिक घटनाओं का उल्लेख किया।

तेरापंथ सभा के मंत्री सुशील संचेती ने विशेष अनुष्ठान में संभागी श्रावक परिवार का स्वागत करते हुए कहा कि पूरा भाग्यनगर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का आभारी है, जिन्होंने घर-घर शक्ति संप्रेषण की प्रेरणा दी। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित मंगल महामंत्र नवकार गीत का संगान

किया गया।

तेमम के अध्यक्ष कविता आच्छा, सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका समता डोसी, प्रेम दुगड़ आदि ने नमस्कार मंत्र की चमत्कारिक अनुभूतियाँ प्रस्तुत की। साध्वीवृंद ने नवकार गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। साध्वीश्री जी के द्वारा मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जाटाबास, जोधपुर।

साध्वी रतिप्रभा जी के मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा मंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि 'बहता पानी निर्मल' यह सूक्ति साधु-साध्वी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। आगम में बताया गया कि साधु चातुर्मास की संपन्नता पर विहार करे, जिससे उसके ज्ञान, दर्शन और चारित्र की शुद्धि बनी रहे।

विहार मार्ग प्रशस्त है और श्रावक-श्राविका जो चातुर्मास में प्राप्त किया उसे खोएँ नहीं और आगे अध्यात्म का विकास हो यह प्रयास होता रहे। चातुर्मास सफल, सुखद रहा, इसमें आपका सहयोग और साध्वीश्री जी का श्रम प्रमुख कारण बना।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि चातुर्मास जीवन को अध्यात्म में नहाने का सुंदर अवसर होता है। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि चातुर्मास सफल तभी बनता है जब देश, काल और भाव-अनुकूल बनें। साध्वी पावनयशा जी ने कहा कि आंतरिक व्यक्तित्व के विकास का सुनहरा अवसर है चातुर्मास। आपने इसमें क्या पाया, क्या खोया, यह चिंतन होना चाहिए।

तेरापंथ सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत, तरुण समदड़िया, धनपत मेहता, तेमम मंत्री पूजा सालेचा, परामर्शदात्री तारादेवी सुराणा, तुप्ति जैन आदि ने साध्वीश्री जी के प्रति अपनी मंगलभावना व्यक्त की। तेमम द्वारा सामूहिक गीत के द्वारा भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन तेमम अध्यक्ष सरिता डोसी ने किया।

संयम की साधना है आत्मा के लिए हितकर : आचार्यश्री महाश्रमण



जोगेश्वरी, २ दिसंबर, २०२३

योगियों के योगेश्वर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः गौरेगाँव से विहार कर जोगेश्वरी पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए परम आचार्यप्रवर पावन ने फरमाया कि परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाया। अणुव्रत आंदोलन का जो मुख्य प्राण है, वह है संयम। जितना असंयम है, उतना आत्मा के लिए अहितकर हो सकता है। संयम की साधना आत्मा के लिए हितकर बन सकती है।

शरीर, वाणी, इंद्रियों और मन का संयम करें। पाँच इंद्रियाँ हमारे पास हैं, इनका संयम रखना साधना है। असंयम से पाप-कर्म का बंध हो सकता है। आचार्यश्री ने जोगेश्वरी पदार्पण के संबंध में कहा कि इस नगरी के साथ योग शब्द

मानो जुड़ा हुआ है। योग साधना, ध्यान और इंद्रियों का संयम आत्मकल्याणकारी है।

सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, जप, तप, स्वाध्याय आदि योग साधना है। ये मोक्ष के लिए उपयोग भूत है। अणुव्रत में भी संयम की बात है। अपने पर अपना अनुशासन हो। अणुव्रत गीत में जीवन संबंधी अच्छी बातें हैं। अणुव्रत गीत का पूज्यप्रवर ने सुमधुर संगान करवाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय सभाध्यक्ष राकेश डागलिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला, तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद ने भी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने सम्यक्त्व के लक्षणों के बारे में समझाया।

प्रवचन सुनने से बदल सकती है जीवन की दशा और दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण



कांदिवली, ३० नवंबर, २०२३

एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। उनमें एक है—श्रोत्रेन्द्रिय। जिसके द्वारा हम सुनते हैं। श्रोत्रेन्द्रिय से अनेक जानकारियाँ प्राणी को प्राप्त होती हैं। तीर्थंकरों की देशना एवं आचार्यों व चारित्रात्माओं के प्रवचन भी कानों से सुनते हैं। सुनने से ज्ञान मिलता है और आदमी के जीवन की दशा और दिशा बदल सकती है।

श्रमण की पर्युपासना करने से दस लाभ बताए गए हैं। सामायिक पूर्वक प्रवचन सुनने से चौबीस घंटों में एक घंटा तो शुभ भावों में बीत गया। साथ में कितने सांसारिक कामों से आप बच गए। सावध योग का त्याग हो गया। सुनने से नई

जानकारी भी मिल सकती है। सुनने से आदमी को अपनी समस्या का समाधान मिल सकता है।

बार-बार सुनते रहने से जीवन में भी परिष्कार हो सकता है। वैराग्य भाव भी जाग सकते हैं। सुनेंगे, जानेंगे तो फिर जीवन में उतरने की बात ज्यादा हो सकेगी। आदमी सुनकर के कल्याण को जान लेता है। सुनकर के पाप को भी जान लेता है। अच्छे और बुरे को जान लिया तो फिर आदमी यह प्रयास करे कि जो श्रेयस्कर-कल्याणकारी है, उसका मैं जीवन में आचरण करूँ।

शास्त्रकार ने कहा है कि ये जो कान है, वो कुंडल से इतना शोभायमान नहीं होता। श्रुत सुनने से कान की शोभा होती है। जिनके पास श्रवण शक्ति है, वो उसका अच्छा उपयोग करे। पूरी सृष्टि में कम से

कम २००० करोड़ साधु होते हैं। चारित्रात्माओं के संपर्क से कितने छोटे-छोटे बच्चों में वैराग्य भाव आ जाते हैं।

आज गुरुदेव तुलसी की मासिक पुण्यतिथि है। गुरुदेव तुलसी तो बहुत छोटी उम्र में धर्मसंघ के आचार्य बन गए थे। उन्होंने धर्मसंघ की सेवा के साथ जैन शासन के लिए भी बहुत कार्य किया था। अनेक अवदान धर्मसंघ को दिए थे। लंबी यात्राएँ उन्होंने ही प्रथम बार की थी। अनेक प्रांतों की यात्रा की थी। वे एक महान यायावर थे। अनेकों को उन्होंने दीक्षित-शिक्षित किया था।

अनेक राजनेता गुरुदेव तुलसी के संपर्क में आए थे। उन्होंने अध्यात्म का, आगमों का, जनोद्धार का बहुत काम किया था। आचार्यश्री तुलसी ने तो अपने आचार्य पद का विसर्जन कर युवाचार्यश्री जी को आचार्य पद स्थापित कर दिया था। हमें भी उनके चरणों में रहने का अवसर मिला था। हम भी जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में यासिका दुगड़, विभा श्रीमाल, नीतू दुगड़, मीनाक्षी भूतोड़िया, कांदिवली, तेयुप अध्यक्ष नवनीत कच्छरा, कन्या मंडल, कांदिवली, तेमम, कांदिवली ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्वचा परामर्श शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत आचार्यश्री तुलसी का ११०वें जन्म दिवस के अवसर पर रियायती दर पर त्वचा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया।

डर्मेटोलॉजिस्ट डॉ० सुनील कुमार ने ३२ सदस्यों का परामर्श करते हुए सभी प्रकार की त्वचा संबंधित, बालों का झड़ना एवं फंगल संक्रमण आदि अन्य समस्याओं का समाधान किया। तेयुप सदस्यों द्वारा स्थानीय लोगों को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं, डॉक्टरों की उपलब्धता एवं अन्य जानकारियों से अवगत करवाया गया। स्थानीय सदस्यों ने कहा कि समय-समय पर शिविरों के आयोजन में जन-मानस में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाकर तेयुप एक सराहनीय कार्य कर रही है। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना द्वारा त्वचा विशेषज्ञ का जैन पट्ट द्वारा स्वागत किया गया।

शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉफ स्मिता एवं दीपा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। तेयुप से राजेश देरासरिया, कमलेश चोरड़िया, ललित मुणोत ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

बैंगलुरु।

आचार्यश्री तुलसी के ११०वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप, बैंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर में मार्गदर्शन फाउंडेशन के सौजन्य से स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन हुआ।

तेयुप, बैंगलुरु के पूर्व अध्यक्ष एवं संयोजक विनय बैद ने मंगलाचरण के साथ जाँच शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में रियायती दर पर लिपिड प्रोफाइल, विटामिन-बी १२, एचबीएवनसी, यूरिया, क्रिएटीनाइन, यूरिक एसिड, लिवर फंक्शन टेस्ट की जाँच की गई। जिसमें ५० लोगों ने लाभ लिया।

शिविर की व्यवस्था में सह-संयोजक प्रसन्न धोका, प्रवीण बोहरा, प्रतीक जोगड़, सिद्धार्थ बैद, प्रदीप चोपड़ा, रेनु कोठारी, वंदना कोठारी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। तेयुप, बैंगलुरु के अध्यक्ष रजत बैद ने प्रायोजक मार्गदर्शन फाउंडेशन एवं उपस्थित कार्यकर्ताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया।

♦ जहाँ तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।

— आचार्यश्री महाश्रमण



चरण स्पर्श की आज्ञा प्रदान कर पूज्यप्रवर ने श्रावक समाज पर बरसायी कृपा

समय का हो सम्यक् उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

कादिवली, २६ नवंबर, २०२३

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी नंदनवन का सफलतम ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर कादिवली पधर गए थे। कादिवली भवन में २००३ का आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का मर्यादा महोत्सव भी हुआ था।

परम पुरुष ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि सृष्टि में मानो अपनी व्यवस्थाएँ बनी हुई हैं। सूर्य-चंद्रमा अपने ढंग से कार्य करते हैं। लोकाकाश में धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय भी व्यापक है। पुद्गल-जीव भी इस सृष्टि में हैं। काल का भी वर्तन होता रहता है। जो वर्तमान है, वह काल महत्त्वपूर्ण है। जो बीत गया वो चला गया है। जो आने वाला है, वो आएगा तब हमारे काम आएगा।

भविष्य करणीय नहीं है। करणीय वर्तमान काल है। हमारे यहाँ दिन-रात की व्यवस्था है। दिन-रात बीत रहे हैं। शास्त्रकार ने कहा कि जो रात बीत जाती है वह लौटती नहीं है। धर्म करने वाले की रात्रियाँ सफल हो जाती हैं। अधर्म करने वाले की रात्रियाँ असफल रह जाती हैं। समय का क्या उपयोग करना चाहिए, यह एक महत्त्वपूर्ण बात है।

समय तो हर जीव का बीतता है। हम मनुष्य हैं, जो विवेकशील हैं, हमको यह ध्यान देना चाहिए कि मैं समय का बढ़िया उपयोग करूँ। रात को सोते समय यह चिंतन करना चाहिए कि आज का जो दिन बीता है, इस काल में मैंने क्या बढ़िया या घटिया



कर रही हैं, उनमें मुख्य है—धन की शक्ति, राज्य की शक्ति और अध्यात्म की शक्ति। सबका अपना-अपना मूल्य है, पर अध्यात्म की शक्ति सर्वोपरी है। अध्यात्म का सुख शाश्वत सुख है, वर्तमान की तनावपूर्ण जीवनशैली में अध्यात्म की शक्ति चित्त समाधि प्रदान करने वाली है।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिवंदना अभिव्यक्त की। शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' की सहवर्ती साध्वियों ने भी पूज्यप्रवर के प्रति अपनी अभिवंदना व्यक्त की। विनोद बोहरा, सभाध्यक्ष पारसमल दुगड़ एवं मनोहर गोखरू ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना की।

पूज्यप्रवर ने पुरुषों के लिए सायं ८ बजे से लगभग ८:१५ तक चरण स्पर्श की घोषणा करवाई।

काम किया। क्या करना चाहिए था, पर कर नहीं सका। जीवन का एक-एक खंड ये सूर्य रोज ले जाता है। अगर सुकृत कार्य किया है, तो आज का दिन सुफल-सफल बीता है।

वह समय खराब है, जो समय किसी का पाप में बीता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपना समय शास्त्र की बात में लगाता है। मूर्ख आदमी का समय व्यसनों और आलस में या लड़ाई-झगड़े में बीत जाता है। आदमी की दिनचर्या अच्छी रहे। समयबद्ध कार्य हो।

चारित्रमोहनीय व क्षयोपशम हो तो

मुनीत्व प्राप्त हो सकता है। चारित्र के जीवन में समता-चित्त समाधि बनी रहे। बुढ़ापा हावी न बन जाए। ध्यान की साधना भी चलती रहे। आज कादिवली भवन में आए हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का अब्दुल कलाम जी के साथ यहाँ मिलन हुआ था।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित मुनि ध्यानमूर्ति जी को छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करवाते हुए पाँच महाव्रत व छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत को विस्तार से समझाकर छेदोपस्थापनीय चारित्र में स्थापित किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि दुनिया में अनेक शक्तियाँ काम



मायानगरी मुंबई के सिनेमा जगत के सितारे एवं अन्य हस्तियां तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन कर आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए



सांसद एवं फिल्म अभिनेत्री हेमामालिनी



प्रसिद्ध शेफ और उद्यमी संजीव कपूर



प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता जितेंद्र कपूर



फिल्म निर्माता और निर्देशक राकेश रोशन



मुंबई के प्रसिद्ध डॉक्टर



टीवी सिरीयल निर्माता असीत मोदी



राजस्थानी लोक-पाप गायक इला अरुण



प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सुधीर पांडे



प्रसिद्ध गायक भूमि त्रिवेदी



संगीतकार कैलाश खेर



फिल्म निर्देशक सुभाष घई



स्थानीय सांसद गजानन्द कीर्ति